बढ़ते कदम
सड़क एवं कामकाज़ी बच्चों का संघ

बालकनामा

आज के समय में सड़क व कामकाजी बच्चों को पूर्ण रूप से अनदेखा किया जा रहा है। अपने साथ हो रहे इस अन्याय के खिलाफ उन्होंने कमर कसी और सड़क व कामकाजी बच्चों की समस्याओं पर अपना एक खुद का अखबार "बालकनामा" लिखकर प्रकाशित करने लगे।

आप भी बन सकते हैं
बालकनामा अखबार का हिस्सा
1 लिखकर
2 खबरों की लीड देकर
3 आर्थिक रूप से मदद करके

बालकनामा से जुड़ने के लिए इस पते पर संपर्क करें - 31 बेसमेंट, गौतम नगर, नई दिल्ली-110049
फोन नं. 011-41644471
ईमेल- editorbalaknama@gmail.com

अंक-120 | सड़क एवं कामकाजी बच्चों का अखबार | अप्रैल 2024 | मूल्य - 5 रूपए

वार्षिक परीक्षा में अच्छे नंबरों से पास होकर सड़क एवं कामकाजी बच्चों के चेहरे पर आई मुस्कान

रिपोर्टर सरिता, हंसराज, काजल, किशन, राज किशोर

आजकल बच्चे और बड़े जहां भी जाएं तो सबसे पहले लोग, रिश्तेदार या पड़ोसी उनके हाल-चाल के बाद उनकी शिक्षा के बारे में जानने में उत्सुक रहते हैं कि वह कितनी शिक्षा प्राप्त कर चुके हैं या अभी शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं। शिक्षा का हमारे जीवन में क्या महत्व है ये तो सभी जानते ही है शिक्षा हम सभी के उज्जवल भविष्य के लिए एक बहुत ही अच्छा और आवश्यक साधन है। हम अपने जीवन में शिक्षा के इस साधन का उपयोग करके कुछ भी प्राप्त कर सकते हैं, शिक्षा का उच्च स्तर लोगों के सामाजिक और पारिवारिक सम्मान तथा एक अलग पहचान बनाने में मदद करता है और शिक्षा के कारण हमें नया ज्ञान, सोचने की क्षमता, और समझदारी भी प्राप्त होती है अथवा सबके जीवन में शिक्षा का प्राप्त करना महत्वपूर्ण माना जाता है परंतु क्या सबके जीवन में सबकी समस्या एक है? सभी जानते हैं सब की समस्यायें अलग-अलग होती है अधिकतर समस्या सड़क एवं कामकाजी बच्चों को होती है इन बच्चों को रोजाना एक नई समस्या से जूझना पड़ता है परंतु उन समस्याओं का सामना करते हुए अधिकतर सड़क एवं कामकाजी बच्चे शिक्षा की ओर बढ़ रहे हैं। वर्तमान वर्ष में अपनी वार्षिक परीक्षा देने के बाद सड़क एवं कामकाजी बच्चे अच्छे अंकों से पास हो रहे हैं इसी क्रम में कामकाजी बच्चों के पास बालकनामा के पत्रकारों ने उनके परीक्षा पास होने से उनके विचार और उनके परीक्षा के अंक जाने।

जब पत्रकार नोएडा सेक्टर 78 की बस्ती में पहुंचे तो एक 13 वर्ष की बालिका से मिले और जाना की वह बालिका कौनसी कक्षा में वर्तमान में पहुंच गई है। बालिका ने बताया की हम पहले अपने गांव बिहार में रहा करते थे और अब वर्तमान में नोएडा सेक्टर 78 में रहते हैं जब हम गांव में थे, तब कोरोना महामारी का दौर चल रहा था और गांव में खाने तक के पैसे खत्म हो गए थे इसीलिए उस दौर में हम नोएडा आ गए हमने सोचा कि हमें नोएडा में कुछ कामकाज मिल जाएगा परंतु यहां पर भी खाने के लिए मोहताज हो गए थे। हम गांव में कक्षा तीन में शिक्षा प्राप्त कर रहे थे परंतु दुर्भाग्य से कक्षा तीन की परीक्षा नहीं दे पाए और फिर हम माता-पिता के साथ नोएडा आ गए। कुछ दिन बाद लॉकडाउन लग गया और जिसके कारण शिक्षा प्राप्त नहीं कर पाए हालाँकि कोरोना महामारी के बीच में हम पास के ट्यूशन भी जाया करते थे और वहां पर बेसिक पढ़ाई किया करते थे ताकि हम जो पढ़ चुके हैं वह भूल न जाए और ज्यादा जानने के लिए भी ट्यूशन जाया करते थे। कोरोना महामारी के बाद हमारी बस्ती में हम चेतना संस्था के कार्यकताओं से मिले और उन्होंने हमसे जाना की वर्तमान में पढ़ाई करते हो या नहीं? फिर हमने अपनी पूरी कहानी उन्हें बताई फिर हम चेतना संस्था के शिक्षा केंद्र पर रोजाना पढ़ने के लिए जाने लगे और फिर कुछ ही माह बाद संस्था के कार्यकताओं ने हमारा सरकारी स्कूल में छठी क्लास में दाखिला करवा दिया। अब आप यह सोच रहे होंगे कक्षा तीन से शिक्षा छोड़ी तो अब कक्षा 6 में कैसे आ गई? जब हम सरकारी स्कूल की अध्यापिका के पास पहुंचे तो उन्होंने हमारा परीक्षा लिया कि हमें कितना क्या-क्या आता है और हमने सब कुछ अच्छा लिखा और सब कुछ अच्छे से बताया तो अध्यापिका ने हमारी तारीफ की और इस प्रकार मेरा उम्र के आधार पर बरौला गांव के सरकारी स्कूल के

कक्षा 6 में दाखिला हो गया और हमने कक्षा 6 में ध्यान लगाकर शिक्षा प्राप्त की और परीक्षा भी दी परिणामस्वरूप हमें 1000 अंक में से 670 अंक प्राप्त हुआ।जब मैं छठी कक्षा की परीक्षा दे रही थी तो मुझे यह डर भी सता रहा था कि मैंने इतने साल तक पढ़ाई नहीं की परंतु क्या मैं अब पास हो पाऊंगी पर अन्तः में मेरा डर नाकाम रहा और मैं सफल रही क्योंकि मैं ट्यूशन भी जाया करती थी जिसके कारण मैं और अच्छे से पढ़ाई कर पाई और इस कारण अध्यापिका ने भी हमारी तारीफ की।

दिल्ली की जखीरा बस्ती में रहने वाले अली (परिवर्तित नाम) से बात की तो अली ने बताया मैं वर्तमान में 13 वर्ष का हूँ और हम दिल्ली में अपने माता-पिता के साथ 6 वर्ष से रह रहे हैं। और माता-पिता फैक्ट्री में कार्य करने के लिए जाते हैं। हम पहले गांव में रहा करते थे परंतु वहां पर कामकाज इतना नहीं था और पहले हम वहां स्कूल भी जाया करते थे परंतु कुछ महीने बाद फिर हमने स्कूल जाना छोड़ दिया क्योंकि विद्यालय में अच्छी पढ़ाई नहीं होती थी जिस कारण पिताजी हमें दिल्ली लेकर आ गए। अब हम ने वर्तमान में छठी कक्षा की परीक्षा दी है इस परीक्षा में मैंने 700 अंक में से 442 अंक प्राप्त किया है, इतने अंक पूरी क्लास में हमारे ही आए और हम क्लास में फर्स्ट पोजीशन पर आए हैं यह देख कर हमें काफी खुशी हुई और कक्षा में अधिकतर बच्चों के 300 से कम ही नंबर प्राप्त हुए हैं। हमारे यह अंक देखकर माता-पिता भी प्रसन्न हुए हैं। मुझे लगता है की हमें शिक्षा प्राप्त करना महत्वपूर्ण है जिस व्यक्ति के पास शिक्षा है वह एक स्थान से दूसरे स्थान पर बिना डरे जा सकता है और शिक्षा से ज्ञान भी बढ़ता है इस कारण हम सबके लिए शिक्षा प्राप्त करना अति महत्वपूर्ण है।

अब हम गुरुग्राम की ओर चलते हैं वहां हमारी बात अभिषेक (परिवर्तित नाम) से हुई, अभिषेक ने बताया की वह 12 वर्ष का है और बादशाहपुर में रहता है वैसे वो मूलतः बिहार का रहने वाला है और वर्तमान में यहाँ रहता है। वह लगभग यहां 5 वर्ष से अपनी झुग्गी में रहता है। पहले जब जब वह गांव में रहते थे तो वहां उन्हें बहुत तकलीफ होती थी क्योंकि वहां कच्चा घर था और वह उनकी माताजी और पिताजी का कोई रोजगार भी नहीं था जिसे उन्हें एक वक्त का खाना भी बड़ी मुश्किल से प्राप्त होता था और भर पेट भोजन भी नसीब नहीं होता था तत्पश्चात इतनी समस्या से जूझने के बाद उन्हें उनके चाचा जी ने एक सलाह दी कि आप हमारे साथ बादशाहपुर रहने चलो वहां आपको अच्छा रोजगार भी मिलेगा और आप अपने परिवार का देखरेख भी अच्छे ढंग से कर पाओगे और बच्चे को पढ़ा लिखा भी पाओगे, अब बालक की माता जी दूसरों के घरों में झाड़ू-पोछा का काम करती है और पिताजी मजदूरी का काम करते हैं। उसके परिवार में दो बहन और एक छोटा भाई और माता-पिता रहते हैं, दोनों बहने स्कूल पढ़ने जाती है और छोटा भाई घर पर रहता है। चूँकि माताजी काम करने जाती है तो अपने छोटे भाई के कारण अभिषेक को उसकी जिम्मेदारी उठानी पड़ी और अभिषेक जिस वजह से स्कूल पढ़ने नहीं जाता था लेकिन चेतना एनजीओ के कार्यकताओं के समझाने पर उसने 2023 में अपना पांचवी कक्षा में दाखिला करवाया अब वह कक्षा 6 में पहुंच गया है वह एक हजार अंक में से 890 अंक प्राप्त कर परीक्षा में उत्तीर्ण हुआ है। अब अभिषेक बहुत खुश है और उसकी खुशी का कोई ठिकाना नहीं है, वह जब पहले स्कूल नहीं जाता था तो वह अपने छोटे भाई को संभालता था और घर के काम में हाथ बटाता था लेकिन अब स्कूल जाता है

दिल्ली की चूना भट्टी में रह रहे बालक दानिश (परिवर्तित नाम) से बात की तो दानिश ने बताया मैं वर्तमान में नौ वर्ष का हूँ, वैसे तो मुझे ज्यादा बोलना पसंद नहीं है इस कारण मैं स्कूल में भी बिल्कुल शांत रहता हूँ, बालक ने बताया मैं अपनी माता जी के साथ और अपने बड़े भाइयों के साथ बस्ती में किराए पर रहता हूँ। मैं रोजाना स्कूल भी जाता हूँ और मैंने पहली कक्षा की परीक्षा दी है, यह परीक्षा 600 अंक की थी जिसमें से मुझे 479 अंक आए हैं और मैं अपनी कक्षा में प्रथम स्थान पर आया हूँ और मैं

शेष पृष्ठ 2 पर

बच्चों को सता रहा झुग्गी बस्ती खाली करने का डर

ब्यूरो रिपोर्ट

जीवन में भय हमें किसी न किसी कारणवश सताता ही रहता है फिर चाहे वह आर्थिक स्थिति के बारे में हो या शारीरिक स्थिति हो या अन्य कोई स्थिति के बारे में। जब पत्रकारों ने नोएडा सेक्टर 101 की बस्तियों में रहने वाले बच्चों से उनके हाल-चाल जाने तो बच्चों ने बताया कि वर्तमान में हमें काफी डर सता रहा है जैसा कि आप भी हर महीने हमसे हमारे हाल-चाल पूछने के लिए आते रहते हैं तो देखते हैं कि हम हमेशा झुग्गी में रहकर खुश रहते हैं। इस स्थान पर लगभग 200 झुग्गियाँ मौजूद है और यह तीन हिस्सों में बटी हुई है, यह झुग्गियाँ सेक्टर 101 में ही है। कुछ हिस्से में सो झुग्गियाँ है एक हिस्से में 50 झुग्गियाँ है और एक हिस्से में 50 झुग्गियाँ है तीनों स्थानों की झुग्गियों के ठेकेदार अलग-अलग है। जिस स्थान पर हम रह रहे हैं वैसे तो यह सरकारी जगह है पर हमसे ठेकेदार झुग्गी के

पैसे लेता है। झुग्गी कितनी बड़ी है उसके अनुसार पैसे लगते हैं यदि दो झुग्गी की जगह है तो हर महीने 3000 रुपए लगते हैं और यदि एक झुग्गी की जगह है तो हर महीने 1500 रुपए लगते हैं। समय-समय पर ठेकेदार को पैसे पहुंच जाते हैं पर सबसे बड़ी समस्या की बात यह है कि कुछ दिन पहले ठेकेदार के पास अथॉरिटी वाले आए थे और वह हफ्ते भर का समय देकर गए हैं और कह कर गए हैं कि हम दोबारा आएंगे और इसी बात को लेकर हमें काफी चिंता हो रही है कि हम एकदम से झुग्गी कैसे खाली करेंगे? पर इस बस्ती में अभी तक किसी ने झुग्गी खाली नहीं की है और हफ्ता भर बीत गया है वह अथॉरिटी वाले अभी तक नहीं आए हैं। अब हम सबको ये डर सता रहा है की यदि वह अचानक से आ जाएंगे तो झुग्गी का सामान भी निकालना मुश्किल हो जाएगा, ठेकेदार का कहना है कि जब वह आएंगे तब देखा जाएगा और बच्चों ने बताया कि फिर मजबूरन हमें फिर कही अपना नया ठिकाना बनाकर किराए के कमरे पर रहना पड़ेगा।

परेशान बच्चों ने लगाई गुहार सुरक्षा के लिए कब्रिस्तान के चारों ओर बने दीवार

रिपोर्टर किशन

कुछ स्थानों पर कुछ चीज ऐसी होती हैं जिन्हें देखकर उनके बारे में स्वतः ही पता चल जाता है परन्तु कई बार वहां ऐसा कुछ भी नहीं होता जिस बारे में उस जगह के बारे में कुछ ज्ञात हो सके। इसी कारण कुछ स्थानों से अनभिज्ञ होकर आम आदमी उसी रास्ते से आता-जाता रहता है और कई बार तो सुनसान जगह पाकर वहां पर शौच भी कर लेता है। नोएडा में जब पत्रकार दौरे के लिए महागुन गांव में पहुंचे और दौरा करते-करते अनजाने में वो एक ऐसे स्थान पर पहुंच गए जहां पर जाने में खतरा था अर्थात वह स्थान कब्रिस्तान था। वह काफी बड़ा और फैला हुआ था, पत्रकार वहां पर खड़े होकर कुछ सोच-विचार कर रहे थे तभी अचानक से कई लोगों उन्हें देखा और पत्रकार को वहां से बुलाया तो पत्रकार उस समय थोड़ा सहम गए, फिर अंततः हिम्मत कर वे सभी कब्रिस्तान के बगल की झुग्गियों में गए और उस बस्ती में रहने वाले बच्चों से इस विषय पर बात की तो बच्चों ने काफी कुछ बताया। पत्रकारों ने बच्चों को सबसे पहले अपना परिचय दिया और पूरा घटनाक्रम भी बताया फिर बालिका ने विस्तृत रूप से कहा की जैसे आप अनजान होकर इस रास्ते से निकल गए, वैसे ही इस स्थान पर कई लोग रोजाना जंगल समझ कर आना-जाना करते हैं पर इसके बगल से सड़क भी जा रही है। हम बच्चे इस बस्ती में रहते हैं तो हमें भी इसके नजदीक रहने से भय महसूस होता है। हमारी बस्ती में कुछ नए लोग रहने के लिए आए थे और उनके साथ एक 14 वर्ष की बालिका भी थी उन्हें इस स्थान पर दो महीने हो गए थे। एक दिन की बात है जब वह इस कब्रिस्तान में अनजान होकर चली गई और उसी दिन से उस बालिका के पीछे एक भूत-प्रेत का साया लग गया और वह उसी दिन से रोजाना अजीब-अजीब हरकतें करने लग गई और जब हमें इस बारे में पता चला तो हमने उस बालिका

की माता जी को यह बताया और फिर उसकी माताजी ने पास में रहने वाले कोई बाबा जी से उसके लिए ताबीज बनवाया तब जाकर वह ठीक हो पाई। इतना ही नहीं इस स्थान पर रात के समय आने-जाने में काफी डर लगता है, हमारे बस्ती के आगे लगभग पांच सौ मीटर की दूरी पर मार्केट है और हमारी बस्ती के आगे काफी अंधेरा रहता है और ना कोई लाइट की भी सुविधा है। जब कभी रात में हमें सब्जी लेने या कोई अन्य सामान जैसे दूध, चीनी व आटा आदि लेने के लिए जाना पड़ता है तो हमें अपनी बस्ती से भाग कर जाना पड़ता है और हम तब तक भागते रहते जब तक उजाला दिखाई ना दे जाए या कोई व्यक्ति आता-जाता दिखाई ना दे जाए। जब हम उस स्थान से निकलते हैं तो ऐसा लगता है कि कोई पीछे से हमें पकड़ने के लिए आ रहा है या हमारी टांग खींचने वाला है और काफी तेज-तेज हवा भी चलती है तो ऐसे कई सवाल मन में उठते हैं। जब हम भागते हैं तो अंधेरे में कई बार गिर भी जाते हैं, इस स्थान से हम लोग ही नहीं आते-जाते अपितु इस गांव के लोग भी इसी स्थान से रात के समय आते-जाते हैं परंतु इस पर कोई इतना ध्यान नहीं देता कि इस पर कुछ कार्यवाही करनी चाहिए। हम चाहते हैं कि जितनी जगह में कब्रिस्तान मौजूद है उतने जगह में चारों तरफ से बाउंड्री बना दी जाए और बाउंड्री के आगे लिख दिया जाए की यह कब्रिस्तान है। ऐसे में कोई अनजान व्यक्ति उसके अंदर जाने से पहले सोचे और उसके साथ ऐसे कोई अप्रिय हादसे न हो जैसे पत्रकार के साथ हुए हैं।

वार्षिक परीक्षा में अच्छे नंबरों से पास होकर सड़क एवं कामकाजी बच्चों के चेहरे पर आई मुस्कान

पृष्ठ 1 का शेष

काफी खुश हूँ। मैं चाहता हूँ कि मैं ऐसे ही पढ़ता रहूं और जीवन में आगे बढ़ूं और मैं सबको सलाह देना चाहता हूँ कि यदि हमारे पास शिक्षा है तो हम कोई सी भी जंग लड़ सकते हैं इसीलिए शिक्षा प्राप्त करना बहुत आवश्यक है।

नोएडा की बस्तियों में पत्रकार एक बालिका से मिले और शिक्षा के विषय पर चर्चा की तो बालिका ने विस्तार से बताया की 'हम अपने माता-पिता के साथ नोएडा में किराए के कमरों में रहते हैं। मैं 13 वर्ष की हूँ और मैं रोजाना स्कूल जाती हूँ और मुझे स्कूल जाना काफी अच्छा लगता है मैं एक दिन भी स्कूल की छुट्टी नहीं करती जिसके कारण मेरी स्कूल में रोजाना तारीफ होती है। मैं वर्तमान में चौथी कक्षा में आ गई हूँ, मैंने तीसरी कक्षा की परीक्षा दी है और 100 प्रतिशत में से 89% आए हैं और मैं इतने नंबर में काफी खुश हूं मेरा सभी से अनुरोध है कि शिक्षा सभी के लिए महत्वपूर्ण है और शिक्षा को प्राप्त करके हम अपनी पहचान बना सकते हैं।

ऐसे ही गुरुग्राम के बादशाहपुर बस्ती में पत्रकार पहुंच कर कामकाजी बच्चों से मिले और जानने का प्रयास किया कि बच्चे कितनी मेहनत के बाद परीक्षा में पास हुए हैं। तभी सायरा (परिवर्तित नाम) ने साझा किया कि 'हम अलीगढ़ के रहने वाले हैं और वर्तमान में गुरुग्राम की बस्तियों में रहते हैं, गांव में अच्छा रोजगार नहीं था और हम गरीब परिवार से भी है इस कारण हमें गुरुग्राम आना पड़ा। गांव में रहकर हम विद्यालय नहीं जाया करते थे बल्कि छोटे बहन-भाइयों को संभालने का कार्य करते थे, फिर जब हम गुरुग्राम आ गए तो हमने कई बच्चों को स्कूल जाते हुए देखा तो इस प्रकार कभी-कभी हमारा भी मन किया करता था कि हम भी स्कूल जाएं देखें वहां पर कैसा लगता है और हमने यह बात अपने पिताजी को बताई तो पिताजी ने कहा कि हम तो गांव में भी पढ़ाने के लिए तैयार थे परंतु वहां पर बहन को संभालना पड़ता था परंतु आप यहां पर भी संभालोगे पर आप पहले स्कूल जाओगे फिर स्कूल से आने के बाद आप अपनी छोटी बहन को देखोगे और माता जी घर पर ही रहेंगे और इस तरह पिताजी ने हमारा स्कूल में दाखिला करवा दिया। अब वर्तमान में मैंने तीसरी कक्षा के परीक्षा दी है और चौथी कक्षा में पहुंच गई हूँ और सो प्रतिशत में से 80% अंक मुझे प्राप्त हुए है और यह अंक देखकर मेरे साथ-साथ हमारे माता-पिता भी काफी खुश है।

प्लास्टिक के फूल बनाते हुए शिक्षा की नई राह हुई रोशन

बालकनामा रिपोर्टरः आकाश
बातूनी रिपोर्टरः रोशन

हमारे बालकनामा रिपोर्टर ने जब जयपुर की विभिन्न कच्ची बस्तियों का दौरा किया और बच्चों से उनकी समस्या एवं अनुभव जानने का प्रयास किया तब बालकनामा रिपोर्टर को एक बेहद अच्छी और सकारात्मक खबर मिली, बस्ती में रहने वाले बालक रोशन (परिवर्तित नाम) से जब बालकनामा रिपोर्टर ने बात की तो 10 वर्षीय रोशन ने बताया की संयुक्त परिवार होने के कारण घर में आजीविका के लिए अक्सर तनातनी चलती रहती है जिसके कारण वह अपनी दो बड़ी बहनों के साथ फूल बनाने के लिए जाने लगा, जहाँ पर वह प्लास्टिक के फूल बनाता है और शाम को घर लौट आता है।

इसके अतिरिक्त बालक रोशन को पढ़ना अच्छा लगता है और वह पहले प्रतिदिन चेतना के केन्द्र पर पढ़ने आता था लेकिन पारिवारिक जिम्मेदारियों के कारण उसकी सेंटर की पढ़ाई छूट गयी और अब उसे पढ़ाई छूटने के कारण सेंटर की बहुत याद आती है।

एक दिन उसने, जहाँ वह फूल

बनाने का काम करता है, वहाँ बगल में कुछ बच्चों की आवाज सुनी, फिर जाकर देखा तो एक बड़ी दीदी कुछ बच्चो को पढ़ा रही थी, 2-3 दिन देखते रहने के बाद रोशन के मन में पढ़ने की इच्छा जाग गयी जो फूल बनाने के कारण छूट गयी थी, वह वहाँ जाके बैठने लगा और दीदी ने उसकी बात सुनकर उसे निःशुल्क पढ़ाना शुरू कर दिया।

आज रोशन पढ़ने में बहुत अच्छा हो गया है और उसे बहुत अच्छा लग रहा है उसका आत्मविश्वास भी पढ़ गया है, इसलिए कहते है की जहाँ चाह वहाँ राह, यह समाज की जिम्मेदारी है की वह हर जगह को बाल सुलभ बनाएं जिससे बच्चो को अपनी बात एवं इच्छा जाहिर करने का मौका मिले, प्राइवेट ट्यूशन न वहन कर सकने वाले रोशन को अनजान दीदी से जो शिक्षा मिल रही है वह बालक के उज्जवल भविष्य में मदद कर रही है।

मिलावटी रंग से होली खेलने पर बच्चों को हुआ त्वचा संक्रमण

बातूनी रिपोर्टर - अंजलि और
बालकनामा रिपोर्टर - हंस कुमार

जब बालकनामा रिपोर्टर हंस कुमार पश्चिमी दिल्ली के शिवाजी पार्क का दौरा करने गए तो वहां की बातूनी रिपोर्टर अंजलि ने उन्हें बताया कि होली के त्योहार पर मिलावटी रंगों ने इलाके के लोगों की परेशानी बढ़ा दी है। कुछ लोगों के चेहरे का रंग बिगड़ गया है तो कुछ लोग रैशेज और अन्य त्वचा रोगों से पीड़ित नजर आ रहे हैं। क्षेत्र में त्वचा संबंधी बीमारियों से लोगों को काफी परेशानी का सामना करना पड़ रहा है। हालाँकि, होली का त्यौहार बहुत धूमधाम से मनाया गया और बच्चे, जवान और बूढ़े सभी आयु वर्ग के लोगों ने होली का भरपूर आनंद लिया लेकिन मिलावटी रंगों के कारण ज्यादातर लोगों को परेशानी हो रही है और सबसे ज्यादा बच्चे संक्रमण की चपेट में हैं। एक स्थानीय बच्चे के चेहरे पर किसी ने पक्का रंग लगा दिया था, उसके चेहरे पर रंग काफी देर तक लगा रहा हलांकि पानी से धोने पर रंग तो छूट गया लेकिन पूरे चेहरे पर रैशेज पड़ गए। एक लड़की भी ऐसी ही समस्या से परेशान है, मिलावटी रंगों के कारण उसका चेहरा लाल हो गया है। होली पर बाजार में सबसे ज्यादा मिलावटी रंग और अबीर-गुलाल की बिक्री होती है। भागदौड़ में लोग अक्सर सुरक्षा के मुद्दे को नजरअंदाज कर देते हैं। रंगों की चमक बढ़ाने के लिए केमिकल

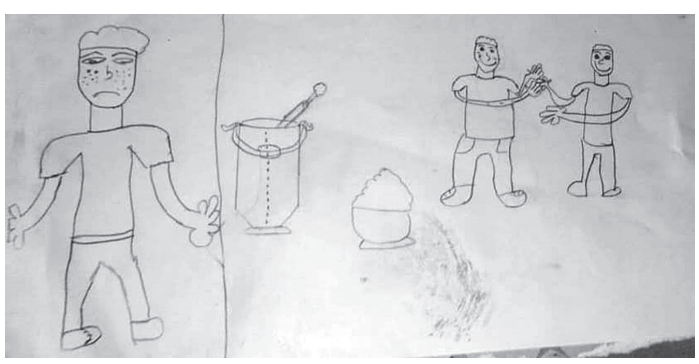

युक्त ग्रिट का प्रयोग किया जाता है। इतना ही नहीं इनमें कई तरह के रसायन भी पाए जाते हैं। हमारी त्वचा बहुत संवेदनशील होती है इसलिए केमिकल रंगों के इस्तेमाल से त्वचा, खासकर चेहरे को अधिक नुकसान होता है। मिलावटी रंगों के इस्तेमाल से चेहरे पर चकत्ते, त्वचा का लाल होना, त्वचा का छिलना और चकत्तों के सबसे ज्यादा मामले सामने आ रहे हैं। अन्य वर्षों की तुलना में इस वर्ष लोग केमिकल युक्त रंगों के प्रति अधिक जागरूक हुए हैं और हर्बल रंगों का चलन भी बढ़ा है, लेकिन इनकी कीमतें अधिक होने के कारण ये झुग्गी-झोपड़ियों में रहने वाले गरीब लोगों की पहुंच से काफी दूर हैं। इसके अलावा कुछ शरारती तत्व अपने केमिकल युक्त मिलावटी रंग लगाने से भी बाज नहीं आते, कई लोगों की आंखों में भी मिलावटी रंगों के कारण संक्रमण हो गया है। यहां के दुकानदार थोड़े से मुनाफे के लालच में बिना किसी रोक-टोक के धड़ल्ले से मिलावटी रंग बेचते हैं। प्रशासन को मिलावटी रंगों के कारोबार पर सख्त कार्रवाई करने की जरूरत है ताकि भविष्य में इसकी बिक्री पर पूर्ण रूप से रोक लगाई जा सके।

बालकनामा में बच्चों की सहमति से फोटो प्रकाशित और उनके नाम परिवर्तित किये गये हैं।

असुविधाओं और देखरेख के अभाव के कारण बच्चों ने आउटडोर पोर्टेबल शौचालयों को हटाने को कहा

ब्यूरो रिपोर्ट

नोएडा का नाम तो आप जानते ही होंगे पर नोएडा में शौचालय की हर एक किलोमीटर की दूरी पर सुविधा मौजूद है। सन 2018 से पहले आउटडोर पोर्टेबल शौचालय मौजूद थे। जो अधिकतर झुग्गी बस्तियों के आगे उपस्थित रहते थे, और रास्ते से आते-जाते लोग और बस्ती के लोग भी उस शौचालय में शौच करने के लिए जाते थे पर वर्तमान में अब वह अधिक मात्रा में दिखना बंद हो गए हैं और अब पब्लिक टॉयलेट (सुलभ शौचालय) मौजूद हो गए हैं। नोएडा सेक्टर 76 की झुग्गी बस्तियों में पत्रकार पहुंचे और पत्रकारों की नजर आउटडोर पोर्टेबल शौचालय की और पड़ी तो देखा यह शौचालय अभी भी मौजूद है पर यह वर्तमान में खराब और काफी गंदे पड़े हुए हैं और उस पर कोई ध्यान भी नहीं देता है। बस्ती में रहने वाले बच्चों से बात की तो बच्चों ने आउटडोर पोर्टेबल शौचालय को लेकर काफी कुछ बताया, बच्चों ने बताया जैसा कि सभी जानते हैं यह शौचालय पहले बहुत ज्यादा मात्रा में चल रहे थे, पर अब इन शौचालयो के बदले पब्लिक टॉयलेट आ गए हैं और सब उसका इस्तेमाल करते हैं, अब इन शौचालय के पास ना कोई कर्मचारी बैठता और ना इन पर कोई ध्यान देता है। यह इस स्थान पर खाली पड़े रहते हैं और गंदे रहते हैं, आउटडोर पोर्टेबल शौचालय के दो डब्बे रखे हैं जिसमें तीन-तीन खाने मौजूद है इनका गेट भी टूटा हुआ है। इतना ही नहीं यह खराब पड़े हुए हैं और छोटे-छोटे बच्चों को झुग्गी बस्ती के लोग इसी में शौच करवाने के लिए बैठा देते हैं। कुछ बच्चे खुद भी आकर स्वयं से इन्ही खराब शौचालय में बैठ जाते हैं और उपयोग के पश्चात पानी तक नहीं डालते, इतना ही नहीं बड़े लोग भी रात के समय ऐसा करते हैं। इन्ही सभी वजहों से काफी बदबू आती है, इधर से निकलना भी मुश्किल हो जाता है पर जो पब्लिक टॉयलेट है वह हमारी बस्ती के बाहर सड़क के किनारे बना हुआ है और वहां पर शौचालय के कर्मचारी वहीं पर रहते हैं और अधिकारी शौचालय निरिक्षण के लिए आते हैं पर वह इन शौचलयों पर नजर तक नहीं मारते। यदि वर्तमान में लोग पब्लिक टॉयलेट का इस्तेमाल कर रहे हैं तो इस आउटडोर पोर्टेबल शौचालय को हटा दिया जाना चाहिए क्योंकि ना तो इसमें पानी आता और ना इसमें गेट है और ना ही इसका कोई ध्यान रखता है।

शिक्षा से जुड़कर सड़क एवं कामकाजी बच्चों का बढ़ा आत्मविश्वास

बातूनी रिपोर्टर अभिषेक, रिपोर्टर सरिता

बालकनामा पत्रकार सरिता ने जब गुरुग्राम हरियाणा के गोगा कॉलोनी बस्ती का दौरा किया तो वहां एक बच्चे से बातचीत हुई जिसका नाम अभिषेक (परिवर्तित नाम) था वह 12 वर्ष का है और बिहार का रहने वाला है और वर्तमान में बादशाहपुर में रहता है ' अभिषेक ने बताया कि, मैं प्रतिदिन स्कूल पढ़ने जाता हूँ क्यूंकि मुझे पढ़ाई करना बहुत अच्छा लगता है, पहले मैं स्कूल पढ़ने नहीं जाता था क्योंकि घर की आर्थिक स्थिति ठीक न होने के कारण मैं अपने पापा के साथ काम मे हाथ बंटाता था लेकिन अब मैं स्कूल जाता हूँ क्योंकि हमारे चेतना एनजीओ के कार्यकर्ता ने मेरा स्कूल में दाखिला करवा दिया है ' आज मैं संस्था की वजह से पढ़ाई कर पा रहा हूँ और मुझे ये विश्वाश है की बड़े होकर मैं कुछ बन भी पाऊंगा ' शुरूवात में तो मुझे स्कूल जाने में बहुत अजीब लगता था लेकिन अब मुझे बहुत अच्छा लगता है क्योंकि मैं स्कूल में बहुत मन लगाकर पढ़ता हूँ और सभी अध्यापक मेरी काफी तारीफ करते हैं जिससे मुझे बहुत खुशी होती है। मैं बड़े होकर डॉक्टर बनना चाहता हूँ क्योंकि मेरी माता जी का हमेशा स्वास्थ्य खराब रहता है जिससे वह काम करने जाती तो है लेकिन अधिक देर तक काम नहीं कर पाती ' इसलिए मैं बड़े होकर डॉक्टर बनुंगा और अपने माताजी का इलाज करूंगा ' मैं गरीब लोगों की भी मदद करना चाहता हूँ, बालकनामा पत्रकार सरिता ने जब अभिषेक से बात की अभिषेक तुम इतने अच्छे बच्चे हो और अपने माता-पिता का भी बखूबी ध्यान रखते हो साथ में तुम पढ़ाई में भी अच्छे हो तो मैं सिर्फ इतना ही कहना चाहूंगी कि तुम ऐसे ही मन लगाकर पढ़ाई करते रहना चाहे स्थिति कैसे भी क्यों ना हो तो अभिषेक ने बोला की मैं हमेशा मन लगाकर पढूंगा और प्रथम स्थान प्राप्त करूंगा क्योंकि मुझे अपने सपनो को पूरा करके दिखाना है यह केवल मेरा सपना ही नहीं मेरा जुनून भी है जिसे पूरा करके मैं अपने माता-पिता का नाम रोशन करना चाहता हूँ जिससे मेरे माता-पिता बहुत खुश होंगे।

काम को और अच्छे से सीख कामयाब होना चाहते है सड़क एवं कामकाजी बच्चे

रिपोर्टर किशन

परेशानियों का सामना करते हुए सड़क सम्बन्धित बच्चे काम की ओर दिन पर दिन बढ़ते जा रहे हैं। बच्चे चाहते हैं कि यदि हम परेशानी में हैं और जब कामकाज पर लग ही गए हैं तो क्यों ना ऐसा कामकाज करें कि आगे के लिए वही कामकाज हमारा एक बड़ा कामकाज बन जाए और उस से आमदनी आने लगे। नोएडा की बस्ती में रहने वाली रीता (परिवर्तित नाम) से जब बालकनामा पत्रकारों ने बात की तो रीता ने अपनी कहानी को बताया और बताया की वर्तमान में वह किन परिस्थितियों से गुजर रही है। उसने कहा मैं वर्तमान में नोएडा में अपनी मौसी के साथ रहती हूँ। मेरे घर में पांच सदस्य हैं मेरे तीन भाई, एक बहन एवं पिता जी और इसके अलावा माता जी की मृत्यु हो गई है इस कारण मैं अभी मौसी के साथ रहती हूँ, जब माता जी मौजूद थे तो उस समय में स्कूल भी जाया करती थी पर फिर माता जी की मृत्यु होने के कारण घर में समस्याएं आने लगी और भाई भी छोटे-छोटे हैं और मैं ही घर में बड़ी हूँ और पिताजी हैं। पिताजी और दो भाई गांव में रहते हैं और मैं और एक भाई मौसी के पास रहते हैं, वर्तमान में मैं सिलाई सीखने के लिए जाती हूँ। दोपहर में 2:00 से 5:00 तक सिलाई सीखती हूँ और सुबह से घर का कामकाज करती और मौसी के बच्चों को संभालती हूँ, माताजी ना होने के कारण मुझे कामकाज करना पड़ रहा है इसके अलावा सिलाई सीखने के महीने के 300 देने पड़ते हैं जो कि अभी मौसी से लेकर दिए जाते हैं। मैं अभी धीरे-धीरे सूट-सलवार आदि सीलना सीख रही हूँ, कुछ मात्रा मैं सीख गई हूँ और घर पर भी आकर सिखती हूँ, घर पर भी मशीन मौजूद है जो गलती होती है फिर मैं सिलाई वाली दीदी को जाकर दिखाती हूँ और वह मुझे फिर बताती है कि क्या गलती है, मैं चाहती हूँ की सिलाई सीख कर अपनी एक खुद की दुकान खोलूं और जैसे मैंने सीखा वैसे ही मैं भी लोगों को सिखाऊं और लोगों के कपड़े सिलूं ताकि घर का खर्चा चले और मैं भी कामयाब हो जाऊं।

लीडर्स ट्रेनिंग का हुआ आयोजन, बच्चो ने की विभिन्न मुद्दों पर चर्चा

बालकनामा रिपोर्टर - हंस कुमार

बालकनामा रिपोर्टर्स और विभिन्न बस्तियों के बच्चों हेतु चेतना संस्था और बालक नाम एडिटर किशन ने केशवपुरम(पश्चिमी दिल्ली) में नेतृत्व प्रशिक्षण सत्र आयोजित किया जिसमें कुल 19 प्रतिभागियों ने भाग लिया। बढ़ते कदम सड़क व कामकाजी बच्चो का संगठन है। बढ़ते कदम हेतु प्रत्येक तीन महीने में लीडर्स ट्रेनिंग आयोजित की जाती है जिसमे सभी सेंटर के लीडर्स शामिल होते है। बढ़ते कदम मीटिंग के एजेंडा और विभिन्न महत्वपूर्ण विषयों को संबोधित करने के लिए सोच-समझकर डिजाइन किया गया था, यह गारंटी देते हुए कि सभी प्रतिभागियों को गहन शिक्षा मिलेगी। सभी बच्चो ने एकदूसरे को अपना परिचय दिया फिर उसके बाद हम सभी ने पिछली ट्रेनिंग के ऊपर थोड़ी चर्चा की। पिछली मीटिंग में किन मुद्दों पर बात हुई थी उसपर चर्चा हुई। उसके बाद हमे तीन ढ'२ यानी की प्रोविजन, प्रोटेक्शन और पार्टिसिपेशन के बारे में गहराई से जाना और इस पर मुखरता से चर्चा हुई। फिर कुछ बच्चो से सवाल किया गया जिसका उन्होंने बहुत अच्छे ढंग से जबाव दिए। इसके उपरांत यूएनसीआरसी के बारे मे बात की गई और बाल अधिकारों के ऊपर भी चर्चा की गई। फिर वहां पर मौजूद सभी प्रतिभागियों ने मिलकर एक क्विज खेला जिसमे यूएनसीआरसी और बाल अधिकारों को लेकर प्रश्न पूछे गए। सभी बच्चों ने मिलकर अच्छे से खेल-खेले और बाद हमने सड़क और कामकाजी बच्चो के अखबार बालकनामा पर चर्चा की,जिसमे न्यूज ढूंढने और उसे लिखने का सही तरीका सीखा और भी इससे संबंधित कई मुद्दों पर बात हुई। फिर ट्रेनिंग में शामिल सभी प्रतिभागियों ने अपनी प्रतिक्रिया दी। उसके बाद बच्चो ने भोजन ग्रहण किया और वापस अपने बस्तियों में चले गए।

CHILDREN'S HELP LINE NUMBERS

CONTACT THESE TOLL FREE NUMBERS IF YOU FACE ANY PROBLEM.

Child line Number
1098
Police Helpline Number
100

पानी की किल्लत की पड़ी मार, फैक्ट्री का गंदा पानी पीकर बच्चे पड़ रहे है बीमार

रिपोर्टर श्रवण

दिल्ली जैसे शहर में जहाँ एक और हम विकास की बात करते है वही दूसरी और पश्चिमी दिल्ली के नेहरू कैंप के लोगों के पास पीने के लिए साफ पानी तक नही है। नेहरू कैंप में रहने वाले बातूनी रिपोर्टर जफरान ने बताया की वह सुबह 5 बजे उठकर कीर्ति नगर में स्थित गत्ते की फैक्ट्री से पैदल पानी भरकर लाता है जो पीने के लायक भी नही है परन्तु प्यास बुझाने के लिए उन्हें मजबूरी में पीना पड़ता है, ना केवल जफरान अपितु समुदाय में रहने वाले अन्य बच्चों का भी कहना है की उनके पास पीने के लिए साफ पानी तक नही है। अब तो आलम ये है की नेहरू कैंप में लगभग हर घर में लोग बीमारियों के शिकार हो रहे है लोगों के बीच चेचक, आँखो से सम्बन्धित रोग , पीलिया, आदि जैसी खतरनाक रोग बढ़ते जा रहे है जिसकी वजह से बच्चे स्कूल भी नही जा पा रहे है अतः मैं श्रवण बालकनामा के माध्यम से सरकार का ध्यान सड़क एवं कामकाजी बच्चों की समस्याओं की ओर देने की ओर अपील करता हूँ।

बाल श्रम छोड़ बालक ने पकड़ी शिक्षा की राह

बालकनामा रिपोर्टर काजलः
बातूनी रिपोर्टर : विजय

बालकनामा रिपोर्टर काजल ने जयपुर की विभिन्न कच्ची बस्तियों में विजिट की इस दौरान मांग्यावास कच्ची बस्ती के सड़क एवं कामकाजी बच्चों से बात की तब 11 वर्षीय बालक विजय (परिवर्तित नाम) ने बताया की बहुत दिनों से हमारी बस्ती में चेतना संस्था की कार्यकर्ता बच्चों को पढ़ाती है। उन्होने एक दिन मुझे भी केन्द्र पर बुलाया और केंद्र पर जो गतिविधियां हो रही थी वह देखकर मुझे बहुत अच्छा लगा। केन्द्र पर बहुत सारे बच्चे मेरे जैसे थे। चेतना की कार्यकर्ता ने मेरे माता - पिता से बात की लेकिन मेरे पिताजी ने यह कहकर उन्हें वापस भेज दिया की बहुत से लोग बस्ती में आते हैं और दो-तीन महीने काम करते हैं और फिर गायब हो जाते हैं। बालक विजय ने बताया की पहले सुबह जल्दी उठकर ही माता - पिता या बच्चों के समूह के साथ कबाड़ बीनने चला जाता था तथा खाने-पीने, नहाने धोने का भान भी नहीं रहता था और शाम को कबाड़ को बेचना व उसमें से कुछ पैसे खाने के लिए मिलना बस यही दिनचर्या थी लेकिन धीरे-धीरे मैनें कबाड़ा बीनना बन्द कर दिया और चेतना के केंद्र आना शुरू दिया। चेतना की कार्यकर्ता ने फिर मेरे माता-पिता को पढ़ाई के प्रति मेरी जिज्ञासा के बारे में बताया और स्कूल एडमिशन के लिए माता - पिता की सहमति ली। चेतना केन्द्र पर मैंने पढ़ाई के साथ बाल अधिकार,लीडर के गुण के बारे में सीखा और आज मैं बहुत खुश हूँ क्योंकि अब मेरा विद्यालय में भी एडमिशन हो गया है।

सड़क एवं कामकाजी बच्चों ने दी पहली बार परीक्षा, अब सता रहा है परिणाम का डर

बातूनी रिपोर्टर -आसिफ

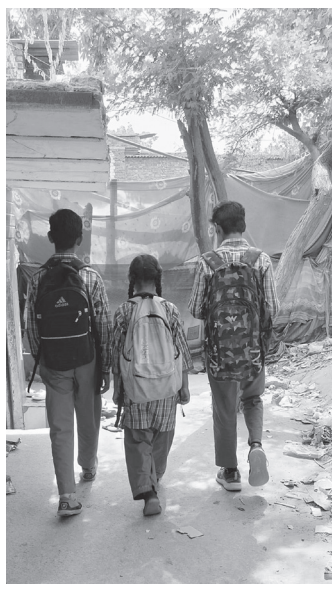

रिजल्ट या परिणाम! जिसका नाम सुनकर ही अक्सर बच्चों की नींद उड़ जाती है ऐसा ही हाल पश्चिमी दिल्ली के कमला नेहरू कैंप के सड़क एवं कामकाजी बच्चों का है जिन्होंने अभी अपनी वार्षिक परीक्षा दी है, इनमे से कुछ वो बच्चे है जिन्होने अपने जीवन में पहली बार स्कूल में परीक्षा दी है, इन्हीं में से ही एक बच्ची जिसका नाम जूली (परिवर्तित नाम) है उसकी उम्र 13 वर्ष है। जूली ने 2023 में ही स्कूल जाना शुरू किया है और वह आठवीं कक्षा में अपने जीवन में पहली बार अपनी वार्षिक परीक्षा दे रही है, जूली के अनुसार उसे परीक्षा देने की जितनी खुशी हुई है उससे कई ज्यादा उसे परीक्षा के परिणाम की चिंता सता रही है। जूली का कहना है वह पढ़-लिखकर अध्यापक बनना चाहती है इसके लिए उसे बहुत पढ़ने की आवश्यकता है ताकि वह अपने जैसे सड़क एवं कामकाजी बच्चों को मुफ्त में पढ़ा सके परन्तु इसके लिए उसे हर कक्षा में पास होना भी जरुरी है, यह हाल सिर्फ जूली का ही नही अपितु सभी बच्चों का है जिन्हे परीक्षा के परिणाम के विषय में सोचकर नींद भी नही आ रही है, बच्चों के अनुसार जैसे-जैसे परिणाम का समय निकट आ रहा है, सभी बच्चों को रिजल्ट का डर सता रहा है हम सभी बच्चों के बेहतर भविष्य की कामना करते है तथा आशा करते है की सभी बच्चे अपनी वार्षिक परीक्षा को अच्छे नंबरों के साथ पास करेंगे।

इंडियन ऑयल टीम ने सड़क एवं कामकाजी बच्चों के संग मनाई होली, वितरित किये स्कूल बैग

बालकनामा रिपोर्टरः आकाश

हम सभी जानते है की होली को 'रंगों का त्योहारह्व भी कहा जाता है और होली हर्ष और उल्लास का पर्व है। इस दिन लोग भी गिले-शिकवे भुलाकर प्यार का रंग लगाते हैं। इस त्योहार पर विशेषतौर से बच्चे बड़े उत्साह के साथ एक दूसरे को रंग, गुलाल लगाते और पिचकारी चलाते हैं । लेकिन इस बार होली पर सड़क एवं कामकाजी बच्चों की खुशियां दोगुनी हो गई। जब बालकनामा रिपोर्टर ने जेडीए बस्ती जयपुर का दौरा किया तो बच्चों ने बताया कि इस होली से पहले इंडियन ऑयल की टीम ने बच्चों को गुलाल लगाकर उनके साथ होली का त्योंहार मनाया इतना ही नहीं सभी बच्चों से बहुत ही सहजता से बात की, सभी बच्चों ने उन्हें अपना परिचय दिया तथा कविता, कहानियाँ, गाने, पहाड़े सुनाकर सब की तालियां भी बटोर ली। इस कार्यक्रम के माध्यम से सामाजिक आर्थिक रूप से कमजोर व पिछड़े सड़क एवं कामकाजी बच्चों के संग इंडियन ऑयल के अधिकारयों ने अनोखी होली मनाकर बच्चो की संघर्षमयी जिंदगी में खुशियाँ भर दी। इस कार्यक्रम में ज्यादातर स्कूल जाने वाले बच्चे शामिल हुए जिनके पास बैग या पानी के लिए बोतल नहीं थी, अतः सभी बच्चों को एक बैग, पानी की बोतल एवं मिठाई का डिब्बा उपहार में दिया गया और इंडियन ऑयल टीम ने बच्चों को शिक्षा के प्रति जागरूक रहने का संदेश दिया और निरंतर शिक्षा से जुड़े रहने के लिए अभिप्रेरित किया।

माता-पिता के आपसी झगड़े के कारण बालिका हुई शिक्षा से दूर, छूटा स्कूल

बालकनामा रिपोर्टर : आकाश
बातूनी रिपोर्टर : गुलिस्ता

बालकनामा रिपोर्टर आकाश ने जयपुर की विभिन्न कच्ची बस्तियों का दौरा किया और बच्चों से उनकी समस्या तथा अनुभव जानने का प्रयास किया तब कली का भट्टा की बातूनी रिपोर्टर गुलिस्ता ने बताया कि मेरी सहेली ईशा (परिवर्तित नाम) मेरे साथ स्कूल पढ़ने जाती थी लेकिन उसके माता-पिता के आपसी झगड़े के कारण स्कूल छूट गया और अभी वह अपने तीन भाई - बहनों को संभालने के लिए घर में ही रहती है और पूरे दिन घर का कार्य करती है। इस बात को विस्तार से जानने के लिए बालकनामा रिपोर्टर आकाश ने ईशा से बात की तब बालिका ने बताया की मेरे माता-पिता का आपस में बहुत झगड़ा होता था और पिता जी मेरी मां को शारीरिक और मानसिक रूप से परेशान करते थे। कई बार सर्दियों की ठंड में उसकी मां को घर से बाहर निकाल देते थे इन सभी झगड़ो के कारण ईशा की मां ने घर छोड़ दिया और सबसे छोटे भाई को लेकर गांव चली गई और वर्तमान में ईशा अपने पिता और दो बहनों और एक भाई के लिए खाना बनाना, कपड़े धोना एवं घर की साफ-सफाई इत्यादि कार्य में लगी रहती है। ईशा ने बहुत ही उदासीनता से बताया कि वह विद्यालय में पढ़ना चाहती थी, पढ़ाई करना उसे बहुत अच्छा लगता था लेकिन माता-पिता के आपसी झगड़ों के कारण उसका विद्यालय छूट गया।

शिक्षा को जारी रखते हुए पंचर की दुकान पर काम करने को मजबूर बचपन

बालक नामा रिपोर्टर : काजल
बातूनी रिपोर्टर : अनिल

बालकनामा रिपोर्टर काजल ने जयपुर की एक कच्ची बस्ती बगराना का दौरा किया तब बच्चों से जानकारी मिली की 13 वर्षीय बालक अनिल (परिवर्तित नाम) जो की वाहन ठीक करने का काम करता है। बच्चों के द्वारा दी गई जानकारी को जानने के लिए रिपोर्टर ने बालक अनिल से मुलाकात की तब अनिल ने बताया की वह मोटर गैराज में रोजाना 2 से 6 बजे तक वाहन ठीक करने का काम करता है, इस कार्य को करने पर उसे माह में 1500 रु मिल जाते हैं। अभी वह गाड़ी की पंचर सही करने जैसे छोटे-छोटे काम करता है बाकी बड़े काम वह सीख रहा है। रिपोर्टर ने अनिल से पूछा कि वह स्कूल जाता है या नही और यह काम क्यों करता है तब अनिल ने बताया कि मुझे पढ़ाई करना बहुत अच्छा लगता है लेकिन परिवार की आर्थिक स्थिति सही न होने के कारण मुझे काम भी करना पड़ता है। मेरे पापा की कमाई से घर खर्च और अन्य जरूरतें पूरी नहीं हो पाती इसीलिए मैंने यह कदम उठाया है, मैं सुबह 7 से 1:00 तक स्कूल जाता हूँ और उसके बाद काम करने जाता हूँ। बालक से यह सब जानकारी जानने पर बालकनामा रिपोर्टर भी आश्चर्यचकित रह गई और बालक का काम करने के साथ - साथ पढ़ाई जारी रखने का जुनून काबिले तारीफ तो था ही लेकिन जिम्मेदारियों के बोझ में बालक का कही न कही बचपन प्रभावित हो रहा है।

बालकनामा में बच्चों की सहमति से फोटो प्रकाशित और उनके नाम परिवर्तित किये गये हैं।

आवारा पशुओं के आतंक से परेशान हुए सड़क एवं कामकाजी बच्चे

बातूनी रिपोर्टर= सुमित,शिवम,
इंसा रिपोर्टर सरिता

जब बादशाहपुर गुरुग्राम की बालकनामा पत्रकार सरिता ने गोगा कॉलोनी बस्ती का दौरा किया तो वहां कुछ बच्चे मिले जिनकी उम्र लगभग 10 से 12 वर्ष के बीच की थी । बातचीत करने पर उन्होंने अपनी एक समस्या पत्रकार सरिता को बताई कि, दीदी हमें अपने चेतना एनजीओ के सेंटर पर पढ़ने आने में बहुत कठिनाई होती है क्योंकि रास्ते में बहुत सारी गाय खड़ी रहती हैं जिसके कारण हम नियमित सेंटर पर नहीं आ पाते ' यह सभी गाये हमारे रास्ते में घेरा लगाकर खड़ी हो जाती हैं जिससे हमें आने-जाने में बहुत कठिनाई होती है, कभी-कभी तो हम डर के कारण आगे भी नहीं जा पाते हैं ' यह गाये अपने सींग से हमें मारने भी दौड़ जाती हैं ' इन गायों के मालिक नहीं होते हैं और जिनके होते है वह इनका दूध निकालकर इन्हें गली में छोड़ देते हैं जिसके कारण वह सारे दिन भर कुड़ा-कचरा ही खाती हैं और शाम को उनका दूध निकाल कर उन्हें फिर से छोड़ दिया जाता है जिससे इन जानवरों पर भी बहुत बुरा असर पड़ता है क्योंकि इनके अंदर बहुत चिड़चिड़ापन आने लगता हैं और वह अपने रास्ते के सामने आए किसी भी व्यक्ति को मारती हैं ऐसे तो कई बार हमारी झुग्गियों में भी यह गायें जाकर बहुत नुकसान करतीं हैं ' यह बहुत बड़ी समस्या है क्योंकि कभी-कभी तो ये हमारी झुग्गियों पर

भी हमला कर देती हैं और उन्हें तोड़ने की कोशिश भी करते हैं जिससे हमें बहुत खतरों का सामना करना पड़ता है अक्सर यह गायें हमारी झुग्गियों के पास ही रहती हैं क्योंकि जो मालिक इनका दूध निकालते हैं वह बादशाहपुर के रहने वाले लोग ही होते हैं और दूध निकलकर उन्हें फिर से हमारी झुग्गियों के पास छोड़ देते हैं ' जिससे हमें बहुत परेशानियों का सामना करना पड़ता है।

हम उन लोगों को बोलते हैं तो वह कहते हैं हम इन्हें कहाँ रखेंगे यह तो घूमने की जगह हैं और इनका जीवन यापन यहीं पर होगा ' जिससे हमें बहुत खतरा भी होता है और हमें अपने सेंटर पर जाने में बहुत दिक्कतों का सामना करना पड़ता है ' कभी-कभी तो हम गाय को देखकर वापस अपने घर भी लौट जाते हैं और कभी-कभी डर के कारण हम अपने सेंटर पर नियमित रूप से नहीं पहुंच पाते हैं जिससे संस्था के कार्यकर्ता हमें सेंटर पर नियमित न आने का कारण पूछते है कि तुम रोज पढ़ने क्यों नहीं आते हो ? तब हम सब बच्चों ने मिलकर यह समस्याएं बताई जिससे इन समस्याओं से हमें निजात मिल पाए और हम नियमित अपने एनजीओ सेंटर पर पढ़ने आ सके '

नशेड़ी लड़के धमकी देकर बच्चो से जबरन मंगवाते है बीड़ी-सिगरेट, मना करने पर देते है मारपीट की धमकी

बालकनामा रिपोर्टर - हंस कुमार और
बातूनी रिपोर्टर - सूफियान

पिछले कुछ समय से दिल्ली में युवकों द्वारा कुछ ऐसी दिल दहला देने वाली घटनाएं देखने को मिली हैं, जिन्हें देखकर ऐसा लगता है कि अब हमारे समाज के कुछ युवक अपराध और नशे के सेवन से गर्त में जा रहें है जो कि बेहद चिंताजनक स्थिति है। किशोर उम्र के लडको द्वारा जिस तरह से आए दिन आपराधिक घटनाओं को अंजाम दिया जा रहा है, वह सोचने वाली बात है। ऐसा ही एक मामला सामने आया जब बालकनामा रिपोर्टर हंस कुमार पश्चिमी दिल्ली के जखीरा का दौरा करने गए तो उन्हे वहां के बातूनी रिपोर्टर सूफियान ने बताया की कुछ दिन पहले रोजाना की तरह वो अपने दोस्तों के साथ

सार्वजनिक शौचालय के पास पकड़म पकड़ाई खेल रहा था तभी कुछ नशे में धुत्त असामाजिक तत्व उसे और उसके कुछ दोस्तो को पकड़कर पास ही में खड़े ट्रकों के पीछे ले गए जहां वो सब पहले से ही नशे का सेवन कर रहे थे। वे सभी लड़के लगभग 19 से 20 साल के आस पास के थे। उन्होंने हमें 50 रुपए देकर व रौब जमाकर बोला की उनके लिए सिगरेट और होटल से तंदूरी रोटी लेकर आएं, मैंने उनसे बोला की हम में से कोई भी उनका कोई काम नहीं करेगा और वहां से जाने लगे। तभी उनमें से दो नशे में धुत्त युवकों ने हमारा रास्ता रोक लिया और मेरा कॉलर पकड़कर धमकाने लगे की यदि हमने उनका काम नहीं किया तो वे हमारी पिटाई करेंगे। वे सभी लगातार अपशब्दों का इस्तेमाल कर रहे थे फिर मेरे एक दोस्त ने हिम्मत दिखाते हुए उनका सामना किया और बोला की हम सब उनके कहने पर कोई काम नहीं करेंगे फिर हम सब दोस्त उन नशे में धुत्त लडको को धक्का देकर वहां से भागकर अपने घर चले गए और सारी घटना की जानकारी अपने माता पिता को दी। फिर हमारे माता पिता और कुछ अन्य पड़ोसी उसी स्थान पर गए लेकिन तब तक वहां कोई मौजूद नहीं था।

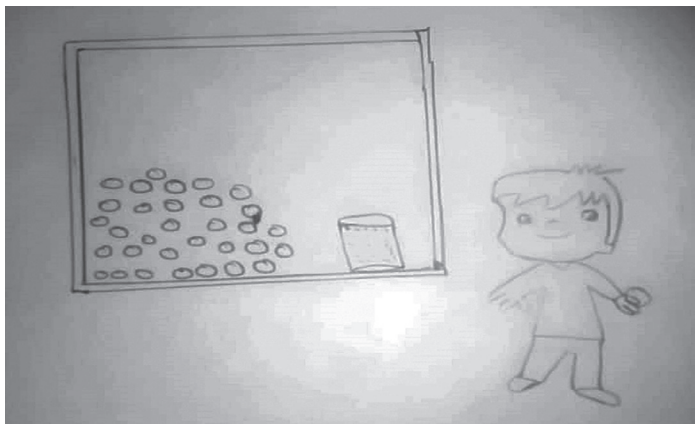

गोलगप्पे बेचकर जीवन यापन करने को मजबूर बच्चे

बालकनामा रिपोर्टर राजकिशोर
बातूनी रिपोर्टर आफरीन

आज मैं आपको एक ऐसे बच्चों की कहानी बताने जा रहा हूँ जो की झुग्गी बस्तियों में रहते हैं, इन बस्तियों में ही रहकर ही वो गोलगप्पे का रेहडी भी लगाते हैं। जब हमारे बालकनामा रिपोर्टर ने निवार्णा कंट्री की बस्तियों में दौरा किया तो पता चला कि कुछ बच्चे ऐसे हैं जो की गोलगप्पे की रेहडी लगाते हैं और वह बच्चे बहुत ही ज्यादा दिक्कतों से गुजर रहे हैं,

जब हमारे बालक नामा रिपोर्टर्स को यह बात पता चली तो हमारे रिपोर्टर उन बच्चों से मिलने के लिए बस्तियों में गए और बस्तियों के लोगों से बातचीत की।

वहां ज्ञात हुआ की एक बच्चा है जो की गोलगप्पे की रेहडी लगाता है। हालाँकि काफी दिक्कतों से खोजने के बाद हमें वो मिला, परन्तु हमें देख कर वह बच्चा बहुत ही ज्यादा घबरा गया और वह घर के अंदर चला गया, बहुत ही मशक्कत के बाद उस बच्चे को बात करने के लिए राजी किया गया, जब हमारे रिपोर्टर उनसे कुछ पूछते तो वह बहुत ही ज्यादा घबरा जाता, तब हमारे बालक नामा अखबार के रिपोर्टर ने उनसे एक दोस्त की तरह बात की, तब वह बच्चा बात को सुनने लगा और रिपोर्टर ने उनसे पूछा कि आप यह काम क्यों करते हो? आपकी ऐसी क्या मजबूरी है जो कि आप ऐसा काम करते हो, आप इतनी छोटी सी उम्र में आप गोलगप्पे बेचते हो? आपकी अभी पढ़ने की उम्र है ना कि काम करने की तब उस बच्चे ने बोला कि मुझे अपनी जरूरतों को पूरा करने के लिए यह काम करना पड़ता है और जो पैसे बच जाते हैं वह मैं अपने घर में देता हूँ जिससे कि मेरा घर भी चलता है।

झुग्गियों के स्थान पर बिल्डिंग बनाये जाने के कारण सड़क एवं कामकाजी बच्चे हो रहे बेघर

बातूनी रिपोर्टर रितिक,
बालकनामा रिपोर्टर सरिता

बालकनामा रिपोर्टर सरिता ने जब हरियाणा गुरुग्राम के बादशाहपुर की झुग्गियों का दौरा किया तो वहां सड़क एवं कामकाजी बच्चें मिले ' बच्चों से जब बातचीत हुई तो उनमे से एक बच्चे ने अपने बारे में बताते हुए कहा कि मेरा नाम रितिक (परिवर्तित नाम) है और मेरी उम्र 15 वर्ष है ' मैं बिहार का रहने वाला हूँ, हम बिहार से काम की तलाश में यहाँ आए है ' मेरी माताजी दूसरों के घरों में झाड़ू-पोछा एवं खाना बनाने का काम करती है और पिताजी मजदूरी का काम करते हैं ' उसने बताया कि, आजकल हमारी आसपास की सभी झुग्गियों को तोड़कर यहां पर लोग पीजी बनवा रहे हैं। पीजी बनाने के कारण हमारी झुग्गी टूट गयी है जिसके कारण हमें यहाँ से पलायन करना पड़ रहा है ' वहां लगभग 25 से 30 झुग्गियां थी जिनमें से 10 या 15 झुग्गियों के लोगों ने अपनी झुग्गियों को पहले ही खाली कर दिया है और 10 - 15 झुग्गियों के

लोग बेरोजगार सड़कों पर ही अपनी रात गुजार रहे हैं ' झुग्गियों के ठेकेदार ने 15 दिनों तक का समय दिया था लेकिन उन दिनों, हमें रहने के लिए कोई नया स्थान नहीं मिल पाया और अंततः हमें अपना सामान लेकर सड़कों पर रहना पड़ रहा है और हम रहने के लिए नया स्थान ढूंढ रहे हैं जिस वजह से हमारा स्कूल भी छूट रहा है ' चेतना एनजीओ के द्वारा हमारे एडमीशन करने में हमारी बहुत मदद की थी और और शिक्षा केंद्रों पर हमे पढ़ाया भी था परंतु अब हमारी मजबूरी हो गयी है क्योंकि हम लोग सड़क पर रहते हैं और वहां से सेंटर अधिक दूर पड़ता है' हमारे कहने का मतलब है कि अब हमारा पढ़ाई से भी नाता छूट रहा है और हमें लगता है कि हम अब कभी पढ़ाई नहीं पाएंगे लेकिन जिस जगह हमें झुग्गी मिल रही है वहां अधिक किराया होने के कारण नहीं ले पा रहे हैं जिससे हमें बहुत कठिनाइयों का सामना करना पड़ रहा है और सड़कों पर हमें अपनी रात गुजारनी पड़ती है ' कभी-कभी तो हमें भूखे पेट भी सोना पड़ता है, माताजी और पिताजी मेहनत मजदूरी करते हैं जिससे अधिक पैसे नहीं कमा पाते हैं और जिस दिन मेहनत मजदूरी नहीं करते हैं उस दिन तो हमें खाना भी नसीब नहीं होता है। पीजी और फैक्ट्री बनने के कारण हमें इतनी कठिनाई हो रही है क्योंकि सभी जगह की झुग्गियों को तोड़ा जा रहा है यह केवल हमारे बादशाहपुर में ही नहीं यह अन्य और स्थान पर भी झुग्गियों को तोड़कर वहां पर पीजी या फैक्ट्री बनायी जा रहीं है जिससे गरीब लोगों एवं बच्चों का रहना अधिक मुश्किल हो रहा है'

CHILDREN'S HELP LINE NUMBERS

CONTACT THESE TOLL FREE NUMBERS IF YOU FACE ANY PROBLEM.

Child line Number
1098
Police Helpline Number
100

बालकनामा में बच्चों की सहमति से फोटो प्रकाशित और उनके नाम परिवर्तित किये गये हैं।

आपसी कलह के कारण स्कूल जा रहे बच्चे हुए शिक्षा से वंचित

रिपोर्टर - सैफअली

क्या होगा अगर स्कूल में पढ़ने वाले बच्चे अचानक से शिक्षा से दूर हो जाए तो? ऐसा ही कुछ पश्चिमी दिल्ली के दो बच्चों के साथ हुआ और वह बच्चे शिक्षा से वंचित हो गए ' पश्चिमी दिल्ली के बालकनामा रिपोर्टर द्वारा विजिट के दौरान पता चला कि उ-4 झुग्गी केशव पुरम में पढ़ने वाले दो बच्चों (जिनकी उम्र क्रमशः 12 व 10) के माता-पिता के साथ उनके ही परिवार के रिश्तेदारों ने मारपीट की और उनके परिवार को धमकाया, बच्चों के परिवार को मारने की धमकी दी गई और वह उनके रिश्तेदारी में ही उनके बहनोई लगते थे ' उन्होंने बच्चों के माता पिता के साथ हाथापाई करके धमकाने के बावजूद उन्हें यहां से जाने के लिए कहा, जिस कारण स्कूल में पढ़ने वाले दोनों बच्चे के माता-पिता ईद के दिन ही सुबह जल्द से जल्द चले गए' हालाँकि यहाँ उन्हें बहुत सी आर्थिक स्थिति का सामना करना पड़ रहा था, बड़ी परेशानियों से वह अपना गुजारा यहां कर रहे थे' रोजगार की तलाश में वो दिल्ली आए थे, बच्चे बिहार के बेगूसराय जिले के रहने वाले थे और अभी 3 महीने पहले ही गांव से दिल्ली रोजगार की तलाश में आए और यहां आकर उन्हें भी बहुत दिक्कतों का सामना करना पड़ा, बच्चों की माताजी चप्पल का माल रंगने का कार्य करके अपना गुजारा करती थी बच्चों की माताजी बच्चों को स्कूल में पढ़ाना चाहती थी और उन्होंने बच्चों का स्कूल में दाखिला भी करवा दिया था उनके दोनों ही बच्चे पढ़ने में बहुत अच्छे थे ' शिक्षा उन तक पहुंची ही थी कि इस घटना ने इन बच्चों के परिवार को ही नहीं बल्कि उनकी शिक्षा को भी बहुत बुरी तरीके से प्रभावित किया आपसी क्लेश के कारण उन्हें दोबारा दिल्ली छोड़कर अपने गांव की और प्रवास करना पड़ा, बच्चों की मानसिक स्थिति और पढ़ाई पर बहुत गहरा असर पड़ा है '

बांस की बुनी हुई टोकरी बनाती बालिका के धुंधलाते सपने और डगमगाता बचपन

बालकनामा रिपोर्टर : आकाश
बातूनी रिपोर्टर : सना

सड़क एवं कामकाजी बच्चों के जीवन की परते खोलें तो उसमे परेशानी, चिंताएं, शोषण और अनेक सपने साफ दिखाई देते है। जयपुर की एक कच्ची बस्ती खोर में हमारे बालकनामा रिपोर्टर ने दौरा किया तो एक ऐसी ही सच्चाई सामने आई जो इस प्रकार है, बालकनामा रिपोर्टर को 13 वर्षीय सना (परिवर्तित नाम) से बात करने का मौका मिला व सना ने खुलकर अपनी बात रखी। सना ने बताया की इस बस्ती में पिछले 04 वर्षों से परिवार के साथ रह रही है। इससे पहले अन्य बस्ती में रहती थी लेकिन कोरोना के कारण बस्ती वहां से हटा दी गई और सरकार ने खोर में शिफ्ट कर दिया । इस कारण से मेरा विद्यालय भी छूट गया, मैं वहां कक्षा 2 में पढ़ती थी और बस्ती हटने के साथ उसकी जिंदगी भी बदल गयी। परिवार में 07 लोग है जिसमे माता -पिता, 05 भाई-बहन और पिता पैरो से विकलांग है । पाँच भाई बहनों में से 02 बालिका से छोटे है, चेतना के वैकल्पिक शिक्षा केंद्र से आने के बाद सना घर पर छाजले बनाने का काम करती है और दिन में लगभग 20-22 बाँस की टोकरी बना देती है। उसे एक बाँस की टोकरी छाजले के 20 मिलते है इस तरह सना 300-400 कमा लेती है और एक जगह बैठे -बैठे दिन के बड़े हिस्से में यह काम करते करते वह थक जाती है और कमर भी दुखने की बात बताती है । इस काम में बालिका की माता व दोनों छोटे भाई-बहन संयुक्त रूप से काम में हाथ बंटाते है । वह सेंटर भी रोज नहीं जा पाती क्योंकि काम करना पड़ता है, कामकाजी होने व श्रम करने के बावजूद बालिका सपने देखती है की वह इस बार के स्कूल एडमिशन के समय स्कूल जा पाये, लेकिन बालिका सना के सामने समस्याओं का विशाल पहाड़ है जिसमे घर परिवार की आर्थिक हालत, स्कूल एडमिशन में उम्र का बाधा बनना , काम छोड़ स्कूल के अनुकूल खुद को ढालना, बालिका सना ने बताया की वह अपने काम से संतुष्ट है क्योंकि उसके पास अभी दूसरा कोई रास्ता नहीं है। वह घर में मदद कर रही है, सना ने बताया की जब वह अपने उम्र के बच्चों को स्कूल जाते देखती है तो उसका मन ललचाता है पर वो इसी बात से मन भर लेती है की उसका काम करना भी जरूरी है।

कचरे के डिब्बे से एक्सपायरी डेट वाली चॉकलेट खाते पाए गए मासूम

बालकनामा रिपोर्टर - हंस कुमार

जब बालकनामा रिपोर्टर हंस कुमार पश्चिमी दिल्ली के शिवाजी पार्क की झुग्गियों का दौरा कर रहे थे तो उस दौरान उन्होंने वहां देखा की कुछ बच्चे कचरे के डिब्बे से कुछ निकाल रहें है। संदेहवश वो उन बच्चों के पास ये जानने गए की वे सभी बच्चे कचरे के डब्बे से क्या निकाल रहे हैं? तो उन्होंने देखा की कुछ बच्चे एक्सपायरी डेट वाली चॉकलेट व टॉफी इत्यादि निकाल रहें है। ये सारा एक्सपायरी डेट का सामान आसपास के दुकानदार यहां लाकर फेंक देते है जिसे ये आसपास की झुग्गियों में रहने वाले बच्चे चुनकर घर ले जाकर खाते हैं। उनमें से कुछ बच्चे वहीं खड़े होकर चॉकलेट खा रहे थे, पत्रकार द्वारा उनसे पूछा गया की वे कचरे के डब्बे से एक्सपायर डेट वाली चॉकलेट क्यों खा रहे है? तो उनमें से एक बच्चा बोला की उनके पास, दुकान से ये महंगी चॉकलेट खरीदने के पैसे नहीं है और उनके माता-पिता की आर्थिक स्थिति इतनी अच्छी नही है वे उन्हे चॉकलेट खरीदकर दे सकें इस वजह से वे एक्सपायरी वाली चॉकलेट खा रहें है। फिर उन बच्चो को समझाया गया की एक्सपायरी डेट के बाद चीजों को खाना पेट को क्षति पहुंचा सकता है। किसी भी प्रोडक्ट या उत्पाद की समाप्त हो चुकी तिथि के एक दिन बाद भी खाना सेहत के लिए कई परेशानियां पैदा कर सकता है। कई बार खाने के प्रोडक्ट्स की तिथि पैकेट में नहीं दिखती है। एक्सपायर्ड फूड के सेवन से पेट में तेज दर्द उठने के साथ उल्टी-दस्त चालू हो सकता है।
एक्सपायरी डेट के बाद हानिकारक तत्व उत्पन्न हो जाते हैं, जो शरीर में पहुंच कर बीमार कर देते हैं। ये सब सुनकर उन बच्चों ने इक्कठा की हुई सारी चॉकलेट्स फेंक दी और वायदा किया की वे आगे से दोबारा कभी भी कचरे के डब्बे या अन्य किसी भी स्थान पर फेंकी हुई एक्सपायरी डेट वाली चॉकलेट इत्यादि नहीं खाएंगे।

ऑनलाइन गेम खेलने की आदत का शिकार हो रहे बच्चे

बालकनामा रिपोर्टर : काजल
बातूनी रिपोर्टर : हनीफ

हम सभी जानते हैं कि आजकल अधिकतर बच्चे अपना पूरा समय ऑनलाइन गेम खेलने में बिताते हैं, इस कारण बच्चे ज्यादातर समय घर के अंदर ही बिताते हैं और बाहर खेलने नहीं जाते। इसी क्रम में जब रिपोर्टर काजल लखेसरा बस्ती जयपुर पर जा रही थी तो रास्ते में उसने कुछ बच्चों को मोबाइल में गेम खेलते हुए देखा । बच्चे कौन - कौन सा गेम खेल रहे हैं या मोबाइल में और क्या-क्या चलाते हैं इसके बारे में जानकारी लेने के लिए उसने बच्चों से बात की तो बालक शरीफ (परिवर्तित नाम) ने बताया की बस्ती में कुछ बच्चों का समूह मोबाइल में फ्री-फायर गेम खेलता है। यह बच्चे गेम में इतने व्यस्त रहते हैं कि स्कूल जाने में भी देर हो जाती है तथा कभी-कभी छुट्टियां भी कर लेते हैं। जब उनके माता-पिता स्कूल भेजने के लिए डाँटते हैं तो यह बहुत तेज गुस्सा करते हैं, कभी-कभी तो ऐसा होता है कि स्कूल के लिए घर से निकलते है लेकिन स्कूल ना जाकर एक जगह ग्रुप बनाकर खेलते रहते हैं। इस बस्ती में 4 से 5 बच्चों के पास मोबाइल है और बच्चों को मोबाइल से गेम खिलाने के लिए उनसे पैसे लेते हैं और बच्चों को ऑनलाइन गेम का इतना चाव लगा है कि वह उन्हें पैसे देकर गेम खेलते हैं।बालकनामा रिपोर्टर ने लगातार गेम खेलने वाले बच्चों को समझाया और बताया कि गेम खेलने की आदत को लगातार फॉलो करने के कारण बच्चों में कई स्वास्थ्य समस्याएं, चिड़चिड़ापन, अकेलापन और यहां तक कि ब्रेन डैमेज होने का भी खतरा भी रहता है।

घर का खाना पकाते समय हुआ था बच्चे के साथ दर्दनाक हादसा

बातूनी रिपोर्टर शहजा व रिपोर्टर किशन

सड़क एवं कामकाजी बच्चे तरह-तरह के कामकाज के साथ-साथ अपने घर के घरेलू कामकाज भी करते हैं। घर के इन घरेलू कामकाजो में बच्चों को अनेक समस्याओं से जूझना भी पड़ता है, जब नोएडा में चार मूर्ति के नजदीक की बस्तियों में बालकनामा पत्रकार पहुंचे और बस्ती में एक बच्चे को देखा, जिसका चेहरा साइड से जला हुआ था।फिर उससे बात की और बात करने के दौरान जलने का कारण भी जाना। बालक ने बताते हुए कहा हम अपने माता-पिता के साथ बस्ती में रहते हैं हमारे घर में 6 सदस्य हैं माता-पिता, दो भाई और दो बहन एक भाई और एक बहन बड़े हैं जो कि वह माता-पिता के साथ बेलदारी के कामकाज के लिए जाते हैं वो सुबह के 8:00 बजे से कामकाज के लिए चले जाते हैं। जो हमसे छोटी बहन है वह घर का घरेलू कामकाज करती है जैसे कपड़े धोना, बर्तन धोना, झाड़ू पोछा करना, खाना पकाना आदि। कभी-कभी माताजी कामकाज पर जाने से पहले वह खुद खाना पका कर जाती हैं वरना दीदी खाना बनाती है, एक दिन की बात है जब ना तो माताजी खाना बनाकर गई थी और ना बहन ने खाना बनाया था और मुझे इतनी तेज भूख लगी थी ऊपर से पिताजी भी कुछ पैसे देकर नहीं गए थे जो कि हम बाहर से खरीद कर खा सके। इस कारण हमने खुद खाना बनाना चाहा। हमने चूल्हे पर रोटी बनाने के लिए तवा रखा और आटा गूंथा और चूल्हे के अंदर जलाने के लिए लकड़ी रखी, कुछ देर में हमने कुछ रोटी बना ली थी और फिर चूल्हे में लकड़ी कम पड़ रही थी और वह बुझ भी रही थी इसलिए उसको जलाने के लिए हमने एक बड़ी लकड़ी रखी और उसमें एक बोरी रखी ताकि आग जल्दी जल जाए पर वह ज्यादा आग जल गई और रोटी जल रही थी। इस कारण हमने सोचा कि वह आग को कम किया जाए वह बड़ी लकड़ी को हमने तोड़ने की कोशिश की परंतु वह नहीं टूटी और जो लकड़ी का आगे वाला मुंह जल रहा था वह उछलकर हमारे एक गाल के तरफ लग गया और वह जली बोरी हमारे मुंह पर आ गिरी जिसके कारण मुंह का एक साइड और पांव-हाथ भी जल गए। फिर तुरंत हमारी दीदी आई और उन्होंने देखा और हमारे पास इतने पैसे नहीं थे कि तुरंत हम पास के डॉक्टर के पास जा सकते और उस से इलाज कराते इस कारण कोलगेट लगाकर काम चलाया। इस बस्ती में हम ही नहीं अन्य बच्चे घर का घरेलू कामकाज करते हैं जो ऐसे ही खाना पकाते समय धुआं, गर्मी या आग आदि परेशानियों से जूझते रहते है।

बालकनामा में बच्चों की सहमति से फोटो प्रकाशित और उनके नाम परिवर्तित किये गये हैं।

पहली बार वार्षिक परीक्षा में सम्मिलित हो रहे सड़क एवं कामकाजी बच्चों ने साझा किये अपने अनुभव

बालकनामा रिपोर्टर : आकाश
बातूनी रिपोर्टर : रणवीर

परीक्षा शब्द हमें थोड़ा उत्साहित तो कहीं थोड़ा चिंतित भी करता है, बच्चे जब परीक्षा देते हैं तो उन्हें भय, चिंता या तनाव की भावना के साथ उत्साह का अनुभव भी होता है। सड़क एवं कामकाजी बच्चों के साथ स्थिति बहुत अलग है इनमें ज्यादातर वह बच्चे हैं जो पहली बार परीक्षा दे रहे हैं, हमारे बालकनामा रिपोर्टर ने ऐसे ही कुछ बच्चों से परीक्षा देने के बारे में उनके अनुभव जानने के लिए एक कच्ची बस्ती में विजिट की जहां बहुत से सड़क एवं कामकाजी बच्चे है जिनकी परीक्षाएं चल रही थी फिर उनके अनुभव जाने तो बालक रणवीर (12 वर्ष) ने बताया की उसने पहली बार कक्षा 6 में प्रवेश लिया है। वह इस बार पहली बार परीक्षा दे रहा है, रणवीर बताता है कि मैं इससे पहले कभी परीक्षा में नहीं बैठा हूँ इसलिए मुझे थोड़ा डर लग रहा है क्योंकि मुझे बाकी बच्चों जितना नहीं आता पर मुझे मजा भी आ रहा है क्योंकि परीक्षा में अलग ही माहौल होता है। सभी दोस्त पढ़ाई के बारे मे बातें करते है, मैं अपने दोस्त के घर जाकर भी पढ़ता हूँ, मैं अपनी तैयारी कर रहा हूँ और मुझे लगता है की मैं परीक्षा में अच्छा करूंगा। बालिका साधना (13 वर्ष) कक्षा 7 में है वह इस बार अपने जीवन की पहली वार्षिक परीक्षा दे रही है, साधना कहती हैं कि मैं परीक्षा के बारे में यह कहना चाहती हूँ की परीक्षा बहुत ही मजेदार होती है मुझे बैग लेकर नहीं जाना पड़ता और मैं जल्दी भी उठती हूँ, मेरी मम्मी मुझे बहुत मदद करती है मुझे घर का ज्यादा काम नहीं करवाती और पढ़ने के लिए कहती है। स्कूल में परीक्षा में जाना और वह भी पहली बार मेरे लिए बहुत ही उत्साह भरा है मेरा हिंदी विषय का परीक्षा पत्र बहुत ही अच्छा रहा है। बालिका अंजलि (12 वर्ष) कक्षा 6 में है वह भी पहली बार परीक्षा दे रही है, अंजलि बताती है कि मुझे परीक्षा पहली बार देते हुए अजीब सा लग रहा है साथ ही थोड़ा दबाव भी महसूस हो रहा है क्योंकि इतने बच्चों के साथ परीक्षा में बैठना मेरे लिए एकदम नया है पर हमारे स्कूल वाले बहुत ही अच्छे हैं वह हमारी बहुत मदद करते हैं, मेरे दोस्त मेरी बहुत मदद करती है जो विषय मुझे आता है उसमें मुझे बहुत अच्छा लगता है कुछ विषय ज्यादा नहीं आते तो उनमें डर लगता है पर मैं पढ़ रही हूं और परीक्षा देना बहुत ही शानदार होता है। इस प्रकार वे सभी सड़क एवं कामकाजी बच्चे जो पहली बार परीक्षा दें रहें है उन्होंने अपने मिले-जुले अनुभव साझा किये व बताया की परीक्षा देना उनके लिए बहुत ही अलग अनुभव है अर्थात उन्हें लग रहा है की ऐसा करके उन्हें आगे बढ़ना है एवं परीक्षा पास कर अपने सपने पूरे करने है।

पत्रकारों ने बच्चों को ओपन बेसिक एजुकेशन से जुड़ने की दी सलाह

बातूनी रिपोर्टर खुशबू व रिपोर्टर किशन

सड़क एवं कामकाजी बच्चों को घर की कई जिम्मेदारियों को ध्यान में रखते हुए, उनके बढ़ते हुए भविष्य को भी बीच में रोकना पड़ता है और ऐसे ही जीवन में लक्ष्य को छूने में बहुत दिक्कतों का सामना भी करना पड़ता है। बिहार में रहने वाली 15 वर्ष की जानकी (परिवर्तित नाम) से उसकी कहानी को जाना तो जानकी ने बताते हुए कहा की हम बिहार के रहने वाले हैं तथा वर्तमान में नोएडा चार मूर्ति के पास किराए की झुग्गी बस्ती में रहते हैं। हमारा खुद का कबाड़ा बीनने और कबाड़ा छाँटने का काम है। हमारे घर में चार सदस्य हैं माता-पिता, एक बहन और एक भाई। हम सभी कबाड़ा का काम करते हैं, 6 महीने पहले मेरा भी जीवन बहुत अच्छा चल रहा था और मैं रोजाना स्कूल जाया करती थी और शिक्षा पर अच्छे से ध्यान दे रही थी साथ ही घर के कामकाज में भी ध्यान दिया करती थी पर अब जीवन कुछ रुक रुक के चल रहा है परिणामतः शिक्षा भी छोड़ दी है। गांव में पिताजी को घर बनवाने के लिए जाना था और उन्होंने जल्द से जल्द गांव जाने की तैयारी करवाई और तुरंत हमें गांव लेकर चले गए, इतना समय भी नहीं दिया कि हम विद्यालय में अध्यापक या अध्यापिका या दोस्तों को जानकारी दें पाए कि हम गांव जा रहे हैं। हम अपनी कॉपी, किताब व बैग आदि नोएडा झुग्गी बस्ती में ही छोड़कर आ चुकी थी, हम सोचे कि 15 से 20 दिन का काम है और हम जल्द लौट आएंगे फिर जाकर स्कूल में सभी को जानकारी दे देंगे पर ऐसा नहीं हुआ। घर को बनवाने में 6 महीने से अधिक लग गए फिर जाकर घर का निर्माण हुआ फिर हमारा पूरा परिवार नोएडा झुग्गी बस्ती में आ गया और फिर हमने अपना कबाड़ का काम पर ध्यान दिया और फिर कुछ दिन बाद हम स्कूल भी गए पर वहां पर जाकर पता चला कि हमारा स्कूल से नाम काट दिया गया है। यह सुनकर हम घर आ गए और यही बात माता-पिता को बताएं, माता-पिता ने यह बात सुनकर कुछ नहीं कहा और ना ही दोबारा स्कूल में दाखिला करवाने की बातचीत की अब वर्तमान में, मैं अपने भाभी के छोटे-छोटे बच्चों को संभालने का कार्य करती हूँ और समय निकालकर मेहंदी सीखने के लिए जाती हूँ। पर क्या हुआ मैंने 6 कक्षा से ही विद्यालय छोड़ा है पर हार नहीं मानी है, मौका मिलेगा तो मैं शिक्षा को आगे जारी रखूंगी इतनी बात सुनकर पत्रकारों ने बालिका को ओपन बेसिक एजुकेशन से शिक्षा प्राप्त करने की सलाह दी जिसे पाकर बालिका काफी खुश हुई।

नशे की लत में नशेड़ियों की लापरवाही का शिकार बना बालक

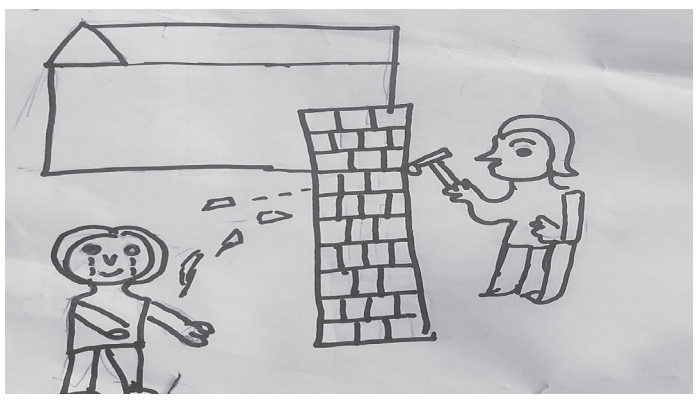

रिपोर्टर - आकाश

आज हम आपको एक ऐसे बच्चे की कहानी बताने जा रहे है जो नशे में पूरी तरह से चूर इंसान की वजह से बुरी तरह से घायल हुआ। शहीद कैंप में उपस्थित सड़क व कामकाजी बच्चों का जीवन वैसे ही बहुत संघर्षमय होता है, वे जीवन में आने वाली हर कठनाई का सामना करने की कोशिश करते है, यह कहानी शहीद कैंप में स्थित 10 वर्षीय बालक की है जो रोजाना की तरह आज भी सडक पर खेलने जा रहा था क्योंकि उसके माता पिता काम पर चले जाते है और बच्चा वहीं रोजाना गली में खेलता रहता है। उस दिन भी वह खेलने के लिए रास्ते में चल रहा था, वह अपने घर से पार्क में खेलने के लिए जा रहा था तभी वहा रास्ते में एक आदमी जिसने बहुत नशा किया हुआ था वह अपना मकान तोड़ रहा था, वह बिलकुल भी होश में नहीं था जिसकी वजह से मकान तोड़ते हुए टूटे हुए पत्थर बच्चे के सिर पर जा गिरे जिससे उसे बहुत चोट लग गई और खून बहने लगा पर नशे में चूर होने के कारण उस व्यक्ति को कुछ पता नहीं चला। बच्चा दर्द से कराह रहा था तभी वहाँ के लोगो ने आकर बच्चे को संभाला और उसकी स्थिति को देखकर तुरंत उसके पिता को सूचित किया, उसके पिता के आने के बाद उसे वे तुरंत अस्पताल में ले कर गए जहाँ उसका इलाज किया गया। इस घटना के बाद बच्चे के पिताजी ने पुलिस में शिकायत दर्ज की एवं उनके दर्ज करने के बाद पुलिस आई व स्मैक पिए हुए व्यक्ति को अपने साथ ले कर चली गयी लेकिन वह व्यक्ति कई बार पुलिस केस में पहले भी फंस चुका था इसलिए उसने थोड़ी दूर जाकर पुलिस वालों को पैसे दिए जिससे उन्होंने उसे छोड़ दिया। जब इसका पता बच्चे के पिता को लगा तो उन्हें बहुत दुख हुआ और वह ना चाहते हुए भी अपना मन मानकर चुप हो गए, इस घटना ने फिर से से वहाँ के बहुत से बच्चों मे डर की भावना पैदा कर दी क्योंकी ऐसा बहुत बार होता है यहां शराबी व स्मेकिये ऐसे ही घूमते है और होश में ना होने के कारण या तो दूसरों को नुकसान पहुंचाते है या स्वयं ही अपना नुकसान करते है। नशा उन पर इतना हावी हो गया है की अब अपनी व किसी और की कोई परवाह नहीं होती पर शहीद कैंप में ऐसे बहुत से लोग है जो अपने नशे में इतने खो जाते है की वह आने-जाने वालों से भी बेवजह झगड़ा करने लगते है या मारपीट करते है और कई बार ऐसा होता है की वह चोरी भी कर लेते है और वहां से गायब हो जाते है।

तपती गर्मी में बर्फ बेचता है मासूम

बालकनामा रिपोर्ट राजकिशोर,
बातूनी रिपोर्टर सोहानूर

आज हम आपको एक ऐसे बच्चे की कहानी बताने जा रहे हैं जो की मात्र 12 वर्ष का लड़का है और वह बर्फ बेचता है। एक दिन जब हमारे बालकनामा अखबार के रिपोर्टर बैठक करने के लिए निरवाना कंट्री की बस्तियां में गए तब बैठक के दौरान वहां पास में ही खड़े बच्चों ने बताया कि की मेरा नाम नूर (परिवर्तित नाम) है और मैं निरवाना कंट्री में रहता हूँ। उस बच्चे ने आगे बताया कि यहां ऐसे बच्चा रहता हैं जो की बर्फ बेचने का काम करता हैं और उसकी उम्र केवल 12 वर्ष के आसपास ही है और वह बच्चा धूप में बस्तियों में जाकर बर्फ बेचता है। जब हमारे बालकनामा अखबार के रिपोर्टर उस बच्चे से मिलने के लिए बस्तियों में गए तो काफी मुश्किल के बाद उस बच्चे का घर पता चला उसके बाद रिपोर्टर उसके घर गए और फिर रिपोर्टर्स उस बच्चे घर के पास जाकर खड़े हो गए और उसके दरवाजा को थपथपाया तो घर से उसकी मम्मी-पापा बाहर निकले फिर पत्रकारों ने उनके मम्मी पापा से बातचीत की और पूछा की क्या आपके बेटे इतनी छोटी सी उम्र में बर्फ बेचने के लिए जाते हैं? इतनी छोटी सी उम्र में आप उनको काम करने के लिए कैसे भेजते हो? आपको पता है ना बच्चों से काम करवाना कितना बड़ा अपराध है, फिर हमारे बालकनामा अखबार की रिपोर्टर ने उनके माता-पिता से बोला कि उस बच्चे को बुला दो हमें उनसे कुछ बात करनी है लेकिन दुर्भाग्यवश उस बच्चे से मुलाकात नहीं हो पाई क्योंकि वह किसी कारणवश घर से बाहर गया हुआ था। हमारे रिपोर्टर्स ने उन्हें एक सलाह दी, कि आप बच्चों को काम करने ना भेजें बल्कि उनको अच्छी शिक्षा दें ताकि वह बड़े होकर आपका नाम रोशन करें और कुछ अच्छा काम करें, क्योंकि बच्चे काम करने के लिए नहीं होते हैं यदि अभी छोटी उम्र से आप बच्चों से काम कराएंगे तो उनका शारीरिक और मानसिक विकास बाधित होगा। बच्चे के अभिभावक ने कहा की आर्थिक तंगी के कारण हमें ये सब करना पड़ता है नहीं तो हम भी चाहते हैं हमारे बच्चे पढ़-लिखकर काबिल बने लेकिन हम आगे से प्रयास करेंगे की बच्चे काम ना करें।

बालकनामा में बच्चों की सहमति से फोटो प्रकाशित और उनके नाम परिवर्तित किये गये हैं।

कूड़े-कचरे में से जंक फूड को छांटकर खाते हैं बच्चे

बातूनी रिपोर्टर मजीबर व रिपोर्टर किशन

जगह-जगह से हम खाना और जंक फूड जैसे पिज्जा, बर्गर, मोमोज या पेप्सी आदि ऑर्डर करके मंगवाते हैं। क्या आप जानते हैं यदि जंक फूड या अन्य भोजन बच जाता है और वह आप लोग कूड़ेदान में डाल देते हैं और फिर उसका क्या होता है? इसी विषय को और विस्तार से जानने के लिए पत्रकारों ने एक ऐसी बस्ती में दौरा किया जिस बस्ती में अधिकतर कूड़ा छाँटना और बीनने का कार्य होता है। बस्ती में पत्रकारों ने देखा कि कई बच्चे कबाड़ी को छांटने और बीनने का कार्य कर रहे हैं, उनसे इस विषय पर जानने का प्रयास किया तब 14 वर्ष के दीपक (परिवर्तित नाम) ने विस्तार से बताते हुए कहा। हम वेस्ट बंगाल के रहने वाले हैं, वर्तमान में नोएडा सूरजपुर के नजदीक झुग्गी बस्तियों में रहते हैं और जगह-जगह से कूड़ा बीनना और छांटने का काम करते हैं तथा यह कार्य करके घर का गुजारा होता है। हमारे घर में पांच सदस्य हैं माता-पिता और दो भाई एवं एक बहन। बड़ा भाई जगह-जगह पर जाकर कबाड़ा लेकर आता है जैसे बिल्डिंग, फैक्ट्री, होटल, आदि बड़ी बहन दूसरों के यहां पर ₹400 में पूरे दिन कबाड़ा छांटने का काम करती हैं, माता-पिता घर पर रहकर जो बड़ा भाई कबाड़ा बीनकर लाता है वह कबाड़े को माता-पिता छांटने का कार्य करते हैं। कबाड़े में तरह-तरह की चीज होती हैं जैसे प्लास्टिक, लोहा, गट्टा, थमाकोल, भोजन, आदि। इस बस्ती में अधिक मात्रा में कबाड़े का कामकाज चलता है और अधिक भोजन होटल, बिल्डिंग, आदि से मिलता है और वही भोजन को जब बच्चे कबाड़ा आदि से छांट रहे होते हैं तो डिब्बे में बोतल में पेप्सी, पिज्जा, बर्गर, मोमोज, आदि भी मिलते हैं और उन मिले जंक फूड को बच्चे खा लेते हैं। कई बार ऐसा होता है की कबाड़े में मिले जंक फूड कुछ ठीक होते हैं और अधिकतर मात्रा में खराब पाए जाते हैं। उनमें से बदबू आने लगती है तब भी बच्चे ना समझ कर भोजन को सही समझ कर खा लेते हैं जिसके कारण बच्चे बीमार भी पड़ जाते हैं। जब बच्चों को जंक फूड खाते हुए माता-पिता देख लेते हैं तो वह यह भी देखते हैं कि वह जंक फूड खराब है या सही है फिर सही जंक फूड को खाने के लिए कह देते हैं और खराब जंक फूड को कूड़ेदान में फेंकवा देते हैं और अधिकतर कूड़े कबाड़े में जंक फूड भोजन आदि के कारण बड़े-बड़े ड्रम भर जाते हैं। बच्चों को माता-पिता चीज खाने के लिए रोजाना पैसे भी देते हैं पर जब बच्चों को कूड़े कबाड़े में से भोजन जंक फूड आदि दिखता है तो वह तुरंत उठाकर उसको खा लेते हैं।

पानी को तरसते बच्चे, सहना पड़ता है गालियां एवं अत्याचार

ब्युरो रिपोर्ट

दुनिया में हर प्रकार से हर किसी का हर कोई फायदा उठाना चाहता है पर कभी-कभी समस्या को हल करने के लिए दूसरों के आगे हाथ भी जोड़ने पड़ते हैं, ऐसे ही नोएडा की कुछ झुग्गी बस्तियों में रहने वाले बच्चों से हो रही समस्याओं के बारे में जाना गया तो बस्ती में रहने वाले कई बच्चों में से एक बालिका ने बताते हुए कहा। हम चार मूर्ति के नजदीक कुछ झुग्गी बस्तियों में रहते हैं जहां पर लगभग 35 से 40 झुग्गी मौजूद है और यह जगह सरकारी जगह है जहां पर आसपास के गांव वालों ने इस जगह पर कब्जा कर रखा है और इस जगह पर झुग्गी बस्ती में रहने वाले सभी लोग झुग्गी के पैसे भी देते हैं। जितनी बड़ी झुग्गी होती है उसी के अनुसार पैसे लगते हैं यदि एक झुग्गी की जगह है तो 1000 से 1200 रुपए महीना पैसा लगता है और डबल झुग्गी चाहिए तो उसका उसी के अनुसार पैसा लगता है हालाँकि इनमें पानी की सुविधा और लाइट की सुविधा मौजूद नहीं होती है। बालिका ने और विस्तार से बताते हुए कहा की इस बस्ती का मालिक का भाई झुग्गी बस्ती के बगल में अपनी भैंस और गाय बांधता है और यहाँ उसका ईंट से बना हुआ घर भी मौजूद है। वह काफी दुष्ट भी है और हम सभी झुग्गी बस्ती में रहने वाले बच्चे एवं बड़े व्यक्ति लोगों को उस व्यक्ति के यहां से पानी लेना पड़ता है। यह नहीं है कि वह हमें पानी फ्री में दे देता है बल्कि 15 से 20 लीटर की एक टंकी भरने के 20 लेता है 15 गैलन भरने के 300 रुपए लेता है और यह पानी को पीने के लिए भी इस्तेमाल करते हैं और हर 15 पानी की गैलन को हर एक दिन छोड़कर एक दिन भरना पड़ता है। जब-जब पानी भरते हैं तब-तब पैसा पानी भरने से पहले देना पड़ता है, इतना ही नहीं वह व्यक्ति शराब भी पीता है और जिस दिन वह शराब पी लेता है उस दिन हमें पानी के लिए तरस जाना पड़ता है क्योंकि वह शराब पीकर सभी बस्ती के बच्चों को एवं बड़ों को गंदी-गंदी गाली गलौज देता है और पानी भरने से मना भी कर देता है। उस व्यक्ति की पत्नी कुछ तरस खाकर हमें पानी भरने देती है वह भी तब भरने देती है तब वह व्यक्ति सो जाता है यदि वह शराब पी रखा है और वह जग रहा है तो वह आंटी भी हमें पानी भरने नहीं देती है क्योंकि वह शराबी व्यक्ति गुस्से में आकर अपनी मोटर को तोड़ देता है। कई बार ऐसा भी हुआ है कि उसने गुस्से में जाकर शराब पीकर मोटर को तोड़ दिया है और कई दिन तक हमें पानी के लिए तरसना पड़ा है और आसपास में नर्सरी भी मौजूद है और वहां पर भी कई झुग्गी मौजूद है और वह लोग इस नर्सरी से पानी भरते हैं तो हमें वहां पर जाकर पानी मांगना पड़ता है। वह भी हमें कई तरह-तरह की बातें सुनाते हैं और वहां से भगा भी देते हैं। कई देर तक खड़े होने के बाद और उनके हाथ जोड़ने के बाद बड़ी मुश्किल से पानी मिल पाता है और फिर वही पानी से घर का गुजारा होता है जितना पैसा महीने में झुग्गी का नहीं जाता उतना पैसा पानी का चला जाता है।

एक वक्त के भोजन के लिए मंदिर एवं मॉल के आसपास खड़े होकर भीख मांगते है बच्चे

बातूनी रिपोर्टर शाहिना व रिपोर्टर किशन

आप अपने आसपास के मंदिरों में पूजा करने के लिए रोजाना जाते हैं और यह भी देखते होंगे कि मंदिरों पर कई बच्चे भीख मांगने के लिए खड़े रहते हैं। क्या आप जानते है कि वहां पर उनके खड़े होने का कारण क्या है? नोएडा की कुछ बस्ती में पत्रकार पहुंचे और वहां पर बच्चों के बारे में जाना तो पता चला की बस्ती में रहने वाले लगभग 20 बच्चे ऐसे हैं जो आसपास के मंदिरों पर भीख मांगने के लिए जाते हैं। बस्ती में रहने वाली एक बालिका से जानने का प्रयास किया कि बच्चे मांगने के लिए क्यों जाते हैं? तो बालिका ने बताया की यहां पर जितने भी बच्चे भीख मांगने के लिए जाते हैं उन सभी बच्चों का भीख मांगने के द्वारा जो चीज प्राप्त होती है उसी से इन बच्चों का एक दिन का पेट भरता है। बस्ती के बच्चे मंदिरों पर सुबह से मांगने के लिए चले जाते हैं और मंदिर के बाहर खड़े हो जाते हैं, मंदिर के आगे-पीछे, दाएं-बाएं चारों तरफ बिल्डिंग एरिया है और मंदिर पर सभी बिल्डिंग में रहने वाले लोग मंदिर पर पूजा करने के लिए रोजाना आते हैं और ये बच्चे वहां पर खड़े होकर उन लोगों से भीख मांगते हैं। बिल्डिंग में रहने वाले लोग पूजा करने के बाद इन्हे प्रसाद देते हैं और कुछ पैसे भी दे देते हैं, इतना ही नहीं यदि मंदिर पर इन बच्चों को कुछ नहीं मिल पाता है तो ये सभी बच्चे पास के शॉपिंग मॉल के पास चले जाते हैं और वहां पर खड़े होकर लोगों से मांगना शुरू कर देते हैं हालाँकि कुछ लोग ऐसे भी होते हैं जो इन्हें कुछ न कुछ दिलवा देते हैं जैसे कपड़ा, फल, सब्जी या पैसे आदि। जब यह सुबह से उस स्थान पर जब तक रहते हैं जब तक घर का एक दिन का भोजन की व्यवस्था ना हो जाए और इसी कारण बच्चों को उनके माता-पिता भी भेजते हैं और स्वयं वो अपने कामकाज के लिए चले जाते है, फिलहाल सभी मांगने वाले बच्चों में से कोई भी स्कूल नहीं जाता है इस कारण यह सभी सुबह से मांगने के लिए निकल जाते हैं।

जुए की लत कर रही है बच्चों का भविष्य बर्बाद

ब्यूरो रिपोर्ट

माता-पिता के घर पर मौजूद न होने पर बच्चे पीठ पीछे खेलते है जुआ, हम बात कर रहे है नोएडा सेक्टर 101 की, जब बालकनामा के पत्रकार बच्चों के साथ बढ़ते कदम मीटिंग के लिया वहां गए तब मीटिंग स्टार्ट करने से पहले पत्रकारों ने झुग्गियों की तरफ नजर दौड़ाई और देखा कि अधिकतर बड़े लोग गोले में बैठकर जुआ आदि खेल रहे हैं। मीटिंग के दौरान पत्रकारों ने बच्चों से इस विषय पर भी चर्चा किया तब जाकर बच्चों ने बताते हुए कहा की इस स्थान पर डेढ़ सौ झुग्गियां मौजूद है और इस झुग्गी बस्ती में अधिकतर माता-पिता सुबह से ही कामकाज के निकल जाते हैं। इस बस्ती में कई बच्चे तरह-तरह के कामकाज के लिए भी जाते हैं जैसे कबाड़ा बीनना, साइकिल की दुकान में काम करना, फैक्ट्री में काम करना, बिल्डिंग में काम करना आदि। बस्ती के बगल में काफी जंगल भी मौजूद है और कुछ बड़े लोग खुले स्थान में दिनभर जुआ खेलते रहते हैं और बच्चे भी इन्हें देखकर झुग्गी बस्ती के बगल के जंगल में कुछ बड़े लोग और बच्चे भी जाकर जुआ खेलते हैं, बड़े लोग बच्चों को खेलने से मना भी नहीं करते हैं और बच्चे जब बड़े लोगों के साथ नहीं खेलते तो वह छोटे-छोटे बच्चे अर्थात 10 वर्ष से लेकर 17 वर्ष तक के बच्चे आपस में खेलने लगते हैं, इन बच्चों के माता-पिता को भी यह बात नहीं पता चल पाती क्योंकि माता-पिता सुबह से लेकर शाम तक कामकाज पर निकल जाते हैं। कुछ बच्चों की माताजी कोठियों में कामकाज करने के लिए जाती हैं पर 12 या 1:00 बजे तक आ जाती है, बच्चे यह समय देखकर तुरंत खेल को बंद कर देते हैं। बच्चों के माता-पिता जो पैसे इन्हें चीज खाने के लिए देते हैं वही पैसों से बच्चे जुआ खेलने लग जाते हैं और इतना ही नहीं किसी बड़े व्यक्ति से या अपने आसपास के दोस्तों से उधार पैसा लेकर भी जुआ खेलते हैं और जो बच्चे कामकाज के लिए जाते हैं वह अपनी आमदनी में से दे देते हैं पर जब माता-पिता को पता चल जाता है तो माता-पिता इन्हें मारते हैं परंतु मारने से भी कोई फायदा नहीं होता फिर वह कुछ ना कुछ बहाना मार कर जुआ खेलने लग जाते हैं।

यह पत्र सीमित वितरण के लिए है इस अंक में सभी चित्र बच्चों की अनुमति से प्रकाशित किए गए हैं

बालकनामा अखबार को प्रकाशित करने में हमारी मदद करने के लिए सरदार नगीना सिंह जी और परिवार तथा अभिनव इमिग्रेशन सर्विसेज प्राइवेट लिमिटेड का बहुत धन्यवाद। आप प्रकाशन में भी हमारी मदद कर सकते हैं। बालकनामा अखबार के प्रकाशन में आप भी सहयोग दे सकते हैं। संपर्क करें : info@chetnango.org

बढ़ते कदम , 31 , बेसमेंट , गौतम नगर , नई दिल्ली - 110049 द्वारा प्रकाशित। न्यूजलेटर सीमित वितरण के लिए। बच्चों के चित्र उनकी अनुमति से प्रकाशित।
समर्थन के लिए संपर्क करें -editorbalaknama@gmail.com फोन - 41644471